सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 8 ● अंक: 52 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार, 26 मार्च, 2022

मूल्य ₹ 3/-

याद रखें, अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना सबसे बड़ा अपराध है।
-नेताजी सुभाष चंद्र बोस

अपनी कड़ी मेहनत और मधुर व्यवहार के... 8 | एमएलसी चुनाव: गाजीपुर में... 3 | योगी कैबिनेट में घटा लखनऊ... 7

योगी सरकार की दूसरी पारी का पहला फैसला

तीन महीने और मिलेगा मुफ्त राशन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने दूसरे कार्यकाल के पहले दिन कैबिनेट बैठक में बड़ा फैसला लिया। उन्होंने कोरोना काल के दौरान शुरू की गई मुफ्त राशन योजना को तीन महीने के लिए और बढ़ा दिया है। सीएम ने कहा कि नवगठित सरकार का पहला निर्णय 15 करोड़ गरीब जनता-जनार्दन को समर्पित है। योजना इसी माह खत्म होने वाली थी।

» कैबिनेट ने लगायी मुहर इसी माह खत्म होने वाली थी मुफ्त राशन योजना

» सीएम योगी बोले, नवगठित सरकार का पहला निर्णय जनता को समर्पित

3270
करोड़ रुपये होंगे खर्च, 15 करोड़ गरीबों को मिलेगा फायदा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि देश के 80 करोड़ और प्रदेश के 15 करोड़ गरीबों को इस योजना का लाभ मिल रहा है। हमारी पहली कैबिनेट बैठक में इस योजना को तीन महीने और आगे बढ़ाने का फैसला लिया गया है। इस योजना के तहत गरीबों को खाद्यान्न के साथ दाल, नमक, चीनी और तेल भी दिया जाएगा। इस योजना से राज्य के खजाने पर 3270 करोड़ रुपये का भार पड़ेगा। इस निर्णय के बाद राज्य के 15 करोड़ लोगों को अगले तीन महीने तक प्रधानमंत्री अन्न योजना के तहत लाभ मिलता रहेगा। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हर नागरिक को संबल प्रदान करने के उद्देश्य से अन्न योजना प्रारंभ की थी। अप्रैल 2020 से मार्च 2022 तक देश की 80 करोड़ जनता को इसका सीधा लाभ मिल रहा है। वहीं राज्य सरकार ने केंद्र सरकार के अतिरिक्त मुफ्त राशन वितरण की योजना संचालित की है।

उन्होंने कहा कि मुफ्त टेस्ट, ट्रीटमेंट और टीका के प्रयास से कोरोना पर काबू पाया गया तो महामारी से उपजने वाली भुखमरी की समस्या के निदान में मुफ्त राशन की योजना बहुत उपयोगी रही है। अंत्योदय एवं पात्र गृहस्थी कार्ड धारक 15 करोड़ प्रदेशवासी डबल इंजन की सरकार में मुफ्त राशन की डबल डोज प्राप्त कर रहे हैं। इस योजना की अवधि मार्च 2022 में समाप्त हो रही थी, जिस पर विचार करते हुए इसे अगले तीन माह तक बढ़ाये जाने का फैसला किया गया है। राशन वितरण की पारदर्शी व्यवस्था पर जोर देते हुए उन्होंने बताया कि 80 हजार उचित दर की दुकानों पर ई- पॉश मशीनें लगी हैं, इससे सही लाभार्थी तक राशन वितरण संभव हो रहा है।

फोटो: सुमित कुमार

अब सदन में प्रतिपक्ष की कमान संभालेंगे अखिलेश

सर्वसम्मति से चुने गए सपा विधायक दल के नेता, विधान सभा में होंगे नेता प्रतिपक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अब विधान सभा में सपा प्रमुख अखिलेश यादव नेता प्रतिपक्ष की कमान संभालेंगे। पार्टी के प्रदेश कार्यालय में विधायक दल की बैठक में आज उन्हें सर्वसम्मति से समाजवादी पार्टी विधायक दल का नेता चुना गया। अखिलेश यादव अब विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका में रहेंगे। वे सदन में भाजपा सरकार को घेरते नजर आएंगे।

सपा के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने बताया कि अखिलेश यादव को नेता विधानमंडल दल चुने जाने का प्रस्ताव वरिष्ठ नेता लालजी वर्मा ने किया। इसका समर्थन राजेन्द्र चौधरी ने किया। वहीं विधायक दल का नेता चुने जाने का प्रस्ताव वरिष्ठ समाजवादी नेता अवधेश प्रसाद ने रखा, जिसका समर्थन वरिष्ठ विधायक आलम बदी आजमी ने किया। बाद में अखिलेश यादव सर्वसम्मति से नेता चुन लिए गए। विधान सभा चुनाव के मैदान में पहली बार उतरे अखिलेश यादव ने मैनपुरी के करहल विधान सभा क्षेत्र से जीत दर्ज की। आजमगढ़ से सांसद रहते विधान सभा का चुनाव लड़ने वाले अखिलेश यादव ने लोक सभा से इस्तीफा दे दिया है। अखिलेश ने कहा था कि वह विधान सभा में यूपी की जनता के मुद्दे उठाएंगे। अखिलेश से पहले बांसडीह से विधायक रहे राम गोविंद चौधरी नेता प्रतिपक्ष होते थे। इस बार वे चुनाव हार गए हैं।

करहल विधान सभा सीट से विधायक हैं सपा प्रमुख, भाजपा सरकार को सदन में घेरते नजर आएंगे अखिलेश

शिवपाल के न बुलाए जाने पर बोले नरेश उत्तम, सहयोगी दलों की बैठक होगी 28 को

सपा के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने शिवपाल यादव के सपा विधायक दल की बैठक में न बुलाए जाने के सवाल पर कहा कि वे हमारे सहयोगी दल के मुखिया हैं। सपा की सभी सहयोगी दलों के साथ 28 मार्च को बैठक होगी। गौरतलब है कि सपा विधानमंडल दल की बैठक में शिवपाल सिंह यादव को नहीं बुलाया गया, जिससे वह नाराज हो गए। शिवपाल यादव ने कहा कि सभी विधायकों को फोन कर बैठक में बुलाया गया लेकिन मुझे पार्टी कार्यालय से कोई सूचना नहीं दी गई। मैं अब लखनऊ से सीधे इटावा जा रहा हूं। जब मुझे कोई सूचना नहीं दी गई तो मैं बैठक में नहीं जाऊंगा। मैंने समाजवादी पार्टी का प्रचार किया। मुझे कुछ नहीं कहना है। अभी कोई फैसला नहीं ले रहा हूं। मैं सपा का विधायक हूं।

छोटे दलों से गठबंधन कर लड़ा था चुनाव

उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव 2022 में समाजवादी पार्टी ने छोटे दलों के साथ गठबंधन किया था। सपा गठबंधन को 125 सीट मिली हैं। इनमें 111 विधायक समाजवादी पार्टी, आठ विधायक राष्ट्रीय लोकदल और छह विधायक ओम प्रकाश राजभर की सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के हैं।

संघ से करीबी ने दिलाई केशव मौर्य को डिप्टी सीएम की कुर्सी

» कौशल को देखते हुए योगी सरकार ने दी तवज्जो

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। केशव प्रसाद मौर्य की सांगठनिक क्षमता और जुझारूपन के अतिरिक्त राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) और विश्व हिंदू परिषद (विहिप) से उनकी करीबी ने ही उन्हें एक बार फिर से उपमुख्यमंत्री की कुर्सी दिलवा दी। विधानसभा चुनाव के पूर्व श्री कृष्ण जन्मभूमि को लेकर दिए गए बयान 'अब मथुरा की तैयारी' ने उनकी राजनीतिक पूंजी और समृद्ध कर दिया। उनका यह बयान पूरे चुनाव में खासा सुर्खियों में भी रहा। बीजेपी के पोस्टर में उन्हें जिस तरह से तवज्जो दी गई, उसे लेकर यही माना जा रहा था कि इस बार भी सरकार उन्हें बड़ा पद सौंपेगी। इस बार विधानसभा चुनाव में भाजपा के पोस्टर में पीएम मोदी के साथ सीएम योगी और केशव प्रसाद मौर्य को भी जगह दी गई।

विधानसभा चुनाव के दौरान प्रदेश में सीएम योगी के बाद सर्वाधिक चुनावी रैलियां केशव मौर्य ने ही कीं। इस वजह से वह अपने विधान सभा क्षेत्र में प्रचार के लिए कम समय दे सके। केशव की यह हार भले ही थी, लेकिन प्रदेश में दोबारा प्रचंड बहुमत से सरकार बनाने में उनका अहम योगदान रहा। इसके पूर्व पिछले विधानसभा चुनाव में भी उनके प्रदेश अध्यक्ष होने के दौरान भाजपा ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 300 से ज्यादा सीटें जीती थीं। उनके इसी कौशल को देखते हुए उन्हें योगी सरकार पार्ट वन में डिप्टी सीएम बनाया गया। विधानसभा चुनाव में सिराथू सीट पर पल्लवी से शिकस्त मिलने के बावजूद यह माना जा रहा था कि चूंकि केशव यूपी भाजपा में पिछड़ी जाति का बड़ा चेहरा हैं, इसलिए उनको फिर बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। पार्टी नेतृत्व ने केशव पर भरोसा जताते हुए उन्हें दोबारा डिप्टी सीएम बना दिया है। वर्ष 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा ने केशव प्रसाद मौर्य को फूलपुर से प्रत्याशी बनाया। तब उन्होंने उस चुनाव में पहली बार पूर्व पीएम जवाहर लाल नेहरू की संसदीय सीट से कमल खिलवा दिया। यहां वह रिकार्ड 3.40 लाख मतों से जीते। इसके पूर्व 2012 में केशव प्रसाद ने सपा की लहर में भी सिराथू विधानसभा सीट भाजपा के खाते में डाली। 2017 में प्रदेश अध्यक्ष होते हुए उन्होंने पार्टी को यूपी में अभूतपूर्व सफलता दिलवाई।

योगी मंत्रिमंडल में 31 नए चेहरों से भविष्य पर निगाह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मंत्रिमंडल में जिस तरह 21 अगड़े और 21 पिछड़ों के साथ 8 दलित एवं एक-एक सिख, मुस्लिम और अनुसूचित जनजाति के चेहरों के साथ सामाजिक समीकरण संतुलित करने की कोशिश की गई है उसने स्पष्ट कर दिया कि अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम से प्रधानमंत्री मोदी की मौजूदगी में 2022 से शुरू हो रही योगी सरकार की दूसरी पारी में शामिल खिलाड़ियों पर सिर्फ अच्छे रन बनाने की ही जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि 2024 के लोकसभा चुनाव में जीत के लिए बेहतर परफॉरमेंस देने का भी जिम्मा है।

मंत्रिमंडल से कई प्रमुख चेहरों को बाहर का रास्ता दिखाते हुए सामाजिक समीकरणों को संतुलित करने वाले अलग-अलग वर्गों से 31 नए चेहरों के जरिए भविष्य की तैयारी के संकल्प का संदेश भी दिया गया है। मंत्रिमंडल में सामाजिक, राजनीतिक और क्षेत्रीय सरोकारों के समीकरणों के साथ पुराने व नए चेहरों के संतुलन से एजेंडे पर ज्यादा साहस व सक्रियता से काम करने का भरोसा भी जताया गया है। डॉ. दिनेश शर्मा सहित कई बड़े चेहरों को योगी सरकार की दूसरी पारी में जगह न देकर यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि बेदाग छवि के साथ नेतृत्व को 2024 के लिए नतीजे देने वाले चेहरों की भी जरूरत है। जिस तरह योगी सरकार-1 के डिप्टी सीएम केशव मौर्य को पराजित होने के बावजूद उप मुख्यमंत्री बनाया गया, लेकिन डॉ. दिनेश शर्मा की जगह ब्राह्मण चेहरे के रूप में ब्रजेश पाठक को उप मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई गई, उससे साफ हो गया कि भाजपा हाईकमान की मंशा सिर्फ जातीय संतुलन साधने भर की नहीं है, बल्कि वह 2024 के लिए ऐसे चेहरों को जिम्मेदारी सौंपना चाहती है जो अपने-अपने समाज के बीच पार्टी की पकड़ व पहुंच को ज्यादा पुख्ता कर सकें। यही वह वजह रही जिसके कारण तमाम बड़े और मंत्रिमंडल के अभिन्न हिस्सा माने जा रहे चेहरों पर 31 नए चेहरों को तवज्जो दी गई। भाजपा के चाणक्य माने जाने वाले अमित शाह कई बार स्वीकार कर चुके हैं कि भाजपा साल के 365 दिन और 24 घंटे चुनाव को ध्यान में रखकर काम करती है। उसकी झलक योगी-2.0 सरकार के शपथग्रहण में भी दिखी। भाजपा को गठबंधन सहित मिले भारी बहुमत के पीछे महिलाओं का ज्यादा मतदान और नौजवानों का जातीयता पर हिंदुत्व को तवज्जो देने का रुझान माना जा रहा है। इस कारण, योगी-2 सरकार में तमाम नौजवानों एवं 5 महिलाओं को शामिल करके इन्हें सम्मान देने का संदेश दिया गया है। साथ ही यह भी साबित करने की कोशिश की गई है कि यदि महिलाएं और नौजवान भाजपा के साथ हैं तो यह पार्टी भी उनके सरोकारों के साथ है। जाहिर है कि इस संदेश से भाजपा ने 2024 के लिए महिलाओं एवं नौजवानों की लामबंदी मजबूत करने की कोशिश की है।

» हिंदुत्व से साधा यूपी का जातीय गणित

आठ विधायक देने वाले लखीमपुर को नहीं मिली तवज्जो

» आखिरी बार यहां से रामकुमार वर्मा बने थे मंत्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधानसभा के दो चुनावों में लगातार आठों सीटें देने वाले खीरी जिले की झोली इस बार भी खाली रही। जिले के किसी विधायक को मंत्री नहीं बनाया गया है। इससे जिले के सियासी गलियारों में मायूसी छा गई।

खीरी जिले में लगातार दो विधानसभा चुनावों से भाजपा रिकॉर्ड बनाती रही। 2017 के चुनाव में भी भाजपा सभी आठों सीटें जीती और इस बार 2022 के चुनाव में भी। बावजूद इसके जिले का कद लखनऊ में नहीं बढ़ सका। इस बार तो कई सीटों पर कांटे के मुकाबले के बाद भाजपा ने जीत हासिल की थी। लगातार दो बार क्लीन स्वीप के बाद इस बार उम्मीदें थीं। इस बार मंत्री पद की दौड़ में कई नाम चल रहे थे। इनमें पांचवी बार के विधायक अरविंद गिरि का नाम सबसे आगे था। चार दिन पहले सोशल मीडिया पर संभावित मंत्रियों की कथित सूची चलने लगी। उसमें भी उनका नाम था। हालांकि भाजपा नेताओं ने उस सूची को गलत बताया था। इस बीच कस्ता विधायक सौरभ सिंह सोनू का नाम चलने लगा। हालांकि वह चर्चा भी निराधार निकली। निघासन में शशांक वर्मा और मोहम्मदी विधायक लोकेंद्र का नाम भी चर्चा में था।

आसान सीट पर किसी तरह प्रतिष्ठा बचा सके नीलकंठ के हाथ से छिटका मंत्री पद

वाराणसी। योगी सरकार के पहले कार्यकाल की उपलब्धियों में बड़े और ऐतिहासिक कार्य में श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का नव्य-भव्य स्वरूप सबसे खास रहा। इसके अलावा भाजपा का गढ़ कहे जाने वाले शहर दक्षिणी विधान सभा क्षेत्र के लिए तमाम सौगातें दी गयी थी। इसके बाद भी इस सीट पर धर्मार्थ कार्य मंत्री डा. नीलकंठ को विधान सभा चुनाव जीतने में नाको चने चबाने पड़े। मतगणना के अंतिम चार चरणों में किसी तरह प्रतिष्ठा बची। माना जा रहा है कि आसान सीट पर कठिन जीत के कारण नीलकंठ तिवारी के हाथ से मंत्री पद छिटक गया। शहर दक्षिणी सीट 1989 से भाजपा के

पास थी। 2017 में इस सीट पर सात बार से विधायक रहे श्याम देव राय चौधरी दादा का टिकट काट कर छात्र राजनीति से निकले अधिवक्ता डा. नीलकंठ को टिकट दिया गया। गंगा व मंदिरों की बहुतायत वाली इस सीट से वह चुनाव जीते और धर्मार्थ कार्य, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री भी बने। इस क्षेत्र को लोगों को उम्मीद थी कि दादा की विरासत संभाल रहे नए विधायक उनकी परंपरा को आगे बढ़ाएंगे। शुरूआती दौर में कुछ ऐसा नजर भी आया। धीरे-धीरे उनकी जनता ही नहीं पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ताओं से भी दूरी बढ़ती गई। बाद में टिकट तो जरूर मिला लेकिन इसे भाजपा का खुद की साख और क्षेत्र में काशी विश्वनाथ धाम विस्तार व सुंदरीकरण समेत कार्यों पर विश्वास बताया गया। क्षेत्र में स्थानीय विधायक की कमियों पर नजर गड़ाते हुए सपा ने इसे भुनाने का प्रयास किया और उनके सामने क्षेत्र के प्रतिष्ठित महामृत्युंजय महादेव मंदिर के महंत किशन को मैदान में उतार दिया।

सबसे कम उम्र के मंत्री बने संदीप सिंह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। योगी सरकार के नए मंत्रिमंडल में सबसे कम उम्र के मंत्री संदीप सिंह तो सबसे ज्यादा उम्र वाले मंत्री डा. अरुण सक्सेना हैं। इस बार का मंत्रिमंडल इस मामले में खास है कि इसमें 73 वर्ष के केवल एक मंत्री हैं जबकि पिछले मंत्रिमंडल में 70 वर्ष के ऊपर के चार मंत्री थे। चुनाव आयोग में जमा किए गए शपथ पत्रों के अनुसार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उम्र 49 वर्ष है और उनसे कम उम्र के 11 मंत्री मंत्रिमंडल का हिस्सा बने हैं।

वहीं इस मंत्रिमंडल में डॉ. अरुण

सक्सेना डॉक्टर हैं तो सबसे कम पढ़े दिनेश खटीक और राकेश राठौर हैं जो केवल आठवीं पास हैं। संदीप सिंह ने यूके की लीड्स बेकेट यूनिवर्सिटी से पब्लिक रिलेशन एंड स्ट्रैटेजिक कम्युनिकेशन में परास्नातक किया है। निषाद पार्टी के संजय निषाद होम्योपैथी डॉक्टर हैं तो जेपीएस राठौर बीटेक-एमटेक हैं। यदि डिग्रियों की बात करें तो सबसे ज्यादा परास्नातक मंत्री बने हैं। इसके साथ ही मुख्यमंत्री के हमउम्र मंत्री जितिन प्रसाद, राकेश राठौर और अनिल राजभर हैं, जिनकी उम्र 49 वर्ष है। जितिन प्रसाद ने दिल्ली के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से स्नातक किया है और इसके बाद उन्होंने एमबीए की डिग्री हासिल की है। वहीं आशीष पटेल भी बीटेक डिग्रीधारक हैं।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

दिनेश शर्मा को संगठन में मिलेगी जिम्मेदारी!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ 52 मंत्रियों ने भी पद और गोपनीयता की शपथ ली। योगी मंत्रिमंडल में इस बार कई चौंकाने वाले नाम शामिल हुए तो कई दिग्गजों को बाहर का रास्ता दिखाया गया है। योगी मंत्रिमंडल से आउट होने वालों में सबसे बड़ा नाम डिप्टी सीएम डॉ. दिनेश शर्मा का है। दिनेश शर्मा की जगह इस बार ब्रजेश पाठक को डिप्टी सीएम बनाया गया है। पाठक पिछली सरकार में कानून मंत्री थे।

वहीं सिराथू विधानसभा सीट से चुनाव हारने के बाद भी केशव प्रसाद मौर्य का पद बरकरार है। चुनाव हारने के बाद सबसे ज्यादा अटकलें केशव प्रसाद मौर्य को लेकर लगाई जा रहीं थीं। बताया जा रहा है कि दिनेश शर्मा को संगठन में जिम्मेदारी दी जाएगी। फिलहाल उनका नाम प्रदेश अध्यक्ष की दौड़ में है। मगर इसका पता

» डिप्टी सीएम के पद पर खरे नहीं उतरे इसलिए काटा गया पत्ता अब संगठन में भेजने की तैयारी

आने वाले दिनों में चल जाएगा कि दिनेश शर्मा को भाजपा कहा फिट करेगी। डॉ. दिनेश शर्मा को 2017 में ब्राह्मण चेहरे के तौर पर डिप्टी सीएम बनाया गया था। सोशल इंजीनियरिंग को साधने के लिए भाजपा ने दो डिप्टी सीएम बनाए। इनमें एक पिछड़ा वर्ग से और दूसरा ब्राह्मण वर्ग था। इस बार भी ऐसा ही है। बस ब्राह्मण चेहरा बदल गया है। राजनीतिक विश्लेषक प्रो. अजय सिंह कहते हैं भाजपा ने जिस उम्मीद के साथ दिनेश शर्मा को डिप्टी सीएम बनाया था, वे उस पर खरे नहीं उतरे सके। जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर ब्राह्मण विरोधी होने के आरोप लग रहे थे, तब दिनेश शर्मा आक्रामता के साथ उसका जवाब नहीं दे पा रहे थे। उनकी जगह ब्रजेश पाठक ने कमान संभाली और योगी पर लग रहे हर तरह के आरोपों का खुलकर जवाब दिया। मंत्रिमंडल में इसका असर देखने को मिल रहा है। पाठक के प्रमोशन की बड़ी वजह यही है। तमाम विरोधी लहर के बावजूद भाजपा ने जीत हासिल की।

एमएलसी चुनाव : गाजीपुर में सपा के दांव ने बढ़ायी भाजपा की मुश्किल

» भाजपा प्रत्याशी के सामने ताल ठोक रहे है निर्दलीय उम्मीदवार मदन सिंह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। गाजीपुर में सपा उम्मीदवार द्वारा अपना नामांकन वापस लेने के बाद सकते में आई सपा ने अब निर्दलीय मदन सिंह यादव पर दांव लगाया है। मदन सिंह को लेकर भाजपा की ओर से सभी रणनीति को सपा और सुभासपा ने मिलकर फेल कर दिया है। अब भाजपा की ओर से अपने उम्मीदवार विशाल सिंह चंचल को जिताने की कवायद शुरू कर दी गई है जबकि गाजीपुर में इस बार सत्ता पक्ष से कोई भी विधानसभा चुनाव का उम्मीदवार जीत हासिल नहीं कर सका है।

पिछले दिनों सपा प्रत्याशी भोलानाथ शुक्ला एवं निर्दलीय देवेंद्र ने नामांकन वापस लिया था। अब यहां दो प्रत्याशी ही मैदान में हैं। इनमें भाजपा के विशाल सिंह चंचल एवं निर्दलीय मदन सिंह शामिल हैं। पिछली बार चंचल निर्दलीय मैदान में थे। इस बार उन्हें भाजपा से प्रत्याशी बनाया गया है। गाजीपुर विधान सभा चुनाव में सातों सीट पर सपा का कब्जा होने से एमएलसी चुनाव बहुत कांटे का हो गया है। पिछले साल हुए ब्लॉक प्रमुख और जिला पंचायत चुनाव में भाजपा का दबदबा रहा लेकिन विधान सभा चुनाव में भाजपा को निराशा मिली। ऐसे में माना जा रहा था कि इस चुनाव में जबरदस्त टक्कर देखने को मिलेगी लेकिन सपा प्रत्याशी के अपना पर्चा वापस लेने के बाद सपा ने निर्दलीय प्रत्याशी मदन सिंह यादव को अपना समर्थन दे दिया है। मदन सिंह यादव 1995 में पहली बार प्रधानी का नामांकन किया था। उनका पर्चा खारिज हो गया था। वर्ष 1995 में राष्ट्रपति शासन लागू था उसी समय मुलायम सिंह यादव के आह्वान पर राजभवन घेरो आंदोलन के दौरान वे जेल गए थे। उसी समय से वह राजनीति में सक्रिय थे। तीन बार जिला पंचायत सदस्य पद का चुनाव हार गए थे। 2010 में पंचायत में प्रधान का चुनाव लड़े लेकिन हार मिली। 2015 में उनकी बेटी रेनू यादव ने प्रधानी का चुनाव जीता था। वर्ष 2021 में मदन सिंह यादव ने प्रधानी में चुनाव जीत दर्ज कर सियासी सफर शुरू किया था। इस बार माना जा रहा है कि एमएलसी चुनाव में वह समाजवादी पार्टी के डमी कैंडीडेट थे। ऐसे में नाम वापसी के बाद से सपा के नेताओं ने उनका समर्थन किया और अब सपा के वह प्रत्याशी हो गए हैं।

गाजीपुर में सपा प्रत्याशी के नामांकन वापस लेने पर निर्दलीय उम्मीदवार को दिया समर्थन

समाजवादी पार्टी के नेताओं को उनको जिताने की जिम्मेदारी सौंप दी गई है। गाजीपुर में प्रधान संघ के अध्यक्ष होने के नाते उनकी जीत को लेकर भी पार्टी काफी हद तक आश्वस्त नजर आ रही है। मुख्तार परिवार और सुभासपा नेताओं की सक्रियता के बीच अब भाजपा उम्मीदवार के लिए गाजीपुर की एमएलसी सीट अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है।

अब तक भाजपा के नौ प्रत्याशी निर्विरोध हुए निर्वाचित

लखनऊ। स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्र के एमएलसी चुनाव में भाजपा के दो और उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिए गए। कुल मिलाकर पहले चरण में 30 में से 9 प्रत्याशी निर्विरोध निर्वाचित घोषित हुए हैं। बाकी 21 सीटों पर 9 अप्रैल को मतदान होगा। गुरुवार को लखीमपुर में निर्दलीय उम्मीदवार नरसिंह यादव ने अपना पर्चा वापस ले लिया। इससे भाजपा उम्मीदवार अनूप कुमार गुप्ता का रास्ता साफ हो गया और वह निर्विरोध निर्वाचित हो गए। इसी तरह बांदा-हमीरपुर सीट से सपा उम्मीदवार आनंद कुमार त्रिपाठी ने अचानक रिटर्निंग आफिसर के यहां पहुंच कर अपना नाम वापस ले लिया। यहां जितेंद्र सेंगर निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिए गए। इसके अलावा सात अन्य भाजपा उम्मीदवारों को अधिकृत रूप से निर्वाचित घोषित कर दिया गया। इसमें एटा-मैनपुरी-मथुरा की एक सीट से आशीष यादव, एटा-मैनपुरी-मथुरा की दूसरी सीट से ओम प्रकाश सिंह, बुलंदशहर से नरेंद्र भाटी, अलीगढ़ से ऋषिपाल, हरदोई से अशोक अग्रवाल, मिर्जापुर-सोनभद्र सीट से श्याम नारायण सिंह उर्फ विनीत सिंह और बदायूं सीट से वागीश पाठक निर्विरोध निर्वाचित हुए।

पोस्ट ग्रेजुएट धामी संभालेंगे पीएचडी पास विधायकों को

उत्तराखंड के नए मंत्रिमंडल में 10वीं पास से लेकर पीएचडी तक के विधायक

» एडीआर की रिपोर्ट में खुलासा, मुख्यमंत्री सहित सभी कैबिनेट मंत्री करोड़पति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तराखंड के नए मंत्रिमंडल में इस बार 10वीं पास से लेकर पीएचडी तक के मंत्री शामिल हैं। सभी मंत्री करोड़पति हैं। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की ओर से यह रिपोर्ट जारी की गई है। एडीआर उत्तराखंड इलेक्शन वॉच के मुताबिक मुख्यमंत्री सहित उत्तराखंड के सभी आठ कैबिनेट मंत्री भी करोड़पति हैं। सीएम सहित सभी मंत्रियों की औसतन सम्पत्ति 16 करोड़ रुपये है। सबसे अधिकतम 87.34 करोड़ संपत्ति घोषित करने वाले मंत्री सतपाल महाराज हैं। सबसे कम 1.24 करोड़ संपत्ति घोषित करने वाले मंत्री चंदन राम दास हैं। देनदारी के मामले में मंत्री सुबोध उनियाल की सर्वाधिक एक करोड़ तीन लाख की देनदारी है। शपथपत्र के हिसाब से गणेश जोशी 10वीं पास, सतपाल महाराज 12वीं पास हैं।

सौरभ बहुगुणा ग्रेजुएशन प्रोफेशनल कोर्स धारक हैं। सीएम पुष्कर सिंह धामी, मंत्री रेखा आर्य, मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल और सुबोध उनियाल पोस्ट ग्रेजुएट हैं। चंदन राम दास ग्रेजुएट हैं। डॉ. धन सिंह रावत पीएचडी धारक हैं। वहीं सबसे खास बात यह है कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी पोस्ट ग्रेजुएट हैं और वह कैबिनेट में पीएचडी पास विधायकों को संभालेंगे, बल्कि राज्य की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए विधायकों से सलाह मशविरा करेंगे, साथ ही दसवीं पास विधायकों की भी राय लेंगे। एडीआर के राज्य समन्वयक मनोज ध्यानी ने बताया कि यह सभी जानकारी चुनाव नामांकन में दिए गए शपथ पत्रों के विश्लेषण के आधार पर सामने आई है।

नई सरकार के सामने ये है चुनौती

जब किसी पार्टी को जनता सत्ता में रहने के लिए बहुमत देती है, तो उससे कई तरह की उम्मीदें भी होती हैं। उत्तराखंड की जनता भी जीतने वाली पार्टी भाजपा से कई उम्मीदें कर रही है।

उत्तराखंड के लोगों का मुख्य मुद्दा पलायन का है। लोग जॉब की तलाश में अपने गांव को छोड़कर शहर जा रहे हैं। उनको अपने क्षेत्र में रोजगार देना या रोजगार की व्यवस्था करना

उत्तराखंड सरकार की जिम्मेदारी है। रोजगार के अलावा राज्य में रोड, शिक्षा, स्वास्थ्य, महंगाई जैसी समस्या भी है, जिसका निवारण वर्तमान की नई सरकार भाजपा को देना होगा।

महिला स्पीकर रितु खंडूरी बोलीं, पहले तो पढ़ाई शुरू करनी होगी

उत्तराखंड के राजनीतिक इतिहास में भाजपा ने नया अध्याय जोड़ा है। प्रदेश को रितु खंडूरी के रूप में पहली महिला स्पीकर मिली है। इस बार के विधान सभा चुनाव में कोटद्वार के दिग्गज कांग्रेस नेता सुरेंद्र सिंह नेगी को हराकर विधायक बनी रितु खंडूरी ने कई मिथक तोड़े हैं। भाजपा ने पूर्व मुख्यमंत्री बीसी खंडूरी की बेटी रितु खंडूरी को विधान सभा स्पीकर बनाए जाने का यह बड़ा फैसला लिया है। विधायक रितु खंडूरी ने कहा कि मैं जानती हूं कि विधान सभा अध्यक्ष का पद संवैधानिक दायित्व है। मैं निष्पक्षता के साथ ईमानदारी से अपने कर्तव्य का निर्वहन करूंगी। जानती हूं कि यह एक संवैधानिक पद है इसलिए सबसे पहले तो उन्हें पढ़ाई शुरू करनी पड़ेगी। विधायी और संसदीय प्रक्रिया से जुड़े नियम-कानूनों को समझना होगा। महिला सदस्यों, कार्मिकों और पत्रकारों की सुविधा के लिए इस दिशा में वह काम करेंगी।

अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक सुविधाएं पहुंचाना सरकार का संकल्प

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी कहते हैं कि सरकार का संकल्प अंतिम छोर तक बैठे व्यक्ति को सुविधा पहुंचाना है। इसके लिए सरकार अंतिम छोर के गांव-गांव व घर-घर तक जाएगी। यूनिफार्म सिविल कोड लागू करने के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि जो भी संकल्प लिए गए हैं, उन्हें पूरा किया जाएगा। यह प्रदेश पक्ष-विपक्ष सबका है, सरकार सभी का सहयोग लेते हुए विकास के पथ पर आगे बढ़ेगी। सरकार का संकल्प राज्य के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक सुविधाएं पहुंचाना है। उत्तराखंड देश का श्रेष्ठ राज्य बने इसके लिए सरलीकरण, समाधान व निस्तारण के मंत्र के साथ कार्य किया जाएगा। सरकार इस मंत्र को अंगीकार करते हुए पूरी पारदर्शिता के साथ चीजों को सरल करेगी।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

दम घोंट रही जहरीली हवा

देश के तमाम शहरों की हवा लगातार जहरीली होती जा रही है। विश्व वायु गुणवत्ता की हालिया रिपोर्ट चौंकाने वाली है। रिपोर्ट के मुताबिक 2021 में दुनिया के सबसे अधिक प्रदूषित 100 शहरों में 63 भारत में हैं। सबसे ज्यादा प्रदूषित शहरों में आधे से अधिक हरियाणा और उत्तर प्रदेश में हैं और देश में होने वाली मौतों की तीसरी बड़ी वजह वायु प्रदूषण है। वायु प्रदूषण के कारण सालाना 150 अरब डॉलर से अधिक का नुकसान हो रहा है। सवाल यह है कि कवायदों के बावजूद देश के तमाम शहरों में वायु प्रदूषण का स्तर सुधर क्यों नहीं रहा है? केंद्रीय और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड क्या कर रहा है? प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश को लेकर केंद्र और राज्य सरकारें गंभीर क्यों नहीं हैं? क्या लोगों की सेहत की सुरक्षा सरकार का दायित्व नहीं है? वायु प्रदूषण का स्थायी समाधान क्यों नहीं किया जा रहा है? क्या लोगों की सेहत से खिलवाड़ करने की छूट किसी को दी जा सकती है?

देश के तमाम शहरों का प्रदूषण चिंताजनक स्तर पर पहुंच चुका है। यह लोगों की सेहत को प्रभावित कर रहा है। डेनमार्क यूनिवर्सिटी ऑफ कोपेनहेगन के पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट की स्टडी की रिपोर्ट के मुताबिक किसी प्रदूषित शहर में तीन साल रहने वाली महिलाओं में हार्ट अटैक का खतरा 43 फीसदी तक बढ़ जाता है। वहीं यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो की एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के अनुसार वायु प्रदूषण के कारण भारत में लोगों की उम्र सात साल कम होने की आशंका है। वायु में पीएम 2.5 की मात्रा में साढ़े चौदह फीसदी की वृद्धि हुई है। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों की तुलना में दस गुना अधिक है। हकीकत यह है कि बड़े ऊर्जा संयंत्रों और औद्योगिक इकाइयों के कारण प्रदूषण बढ़ रहा है। इसके अलावा वाहन से निकलवे वाले धुएं, कोयले से चलनेवाले ऊर्जा संयंत्र, औद्योगिक कचरा, निर्माण कार्य, पराली और कूड़ा जलाने से भी समस्या विकराल होती जा रही है। खुद सुप्रीम कोर्ट प्रदूषण को लेकर गंभीर चिंता जता चुका है और इस पर नियंत्रण के निर्देश जारी कर चुका है लेकिन हालात में सुधार नहीं हो रहे हैं। जाहिर है प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन रोकने में सरकारों, उद्योगों और नागरिकों को मिल कर काम करना होगा। देश के नीति-नियंताओं को समझना होगा कि प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिये युद्ध स्तर पर प्रयास किये जाने का वक्त आ चुका है। लिहाजा टुकड़ों-टुकड़ों में किये जाने वाले प्रयासों के बजाय इस समस्या को समग्र रूप में देखना होगा। इसके लिये नागरिकों के स्तर पर भी व्यापक जागरूकता अभियान चलाना होगा अन्यथा हालात बेकाबू हो जाएंगे।

“ देश के नीति-नियंताओं को समझना होगा कि प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिये युद्ध स्तर पर प्रयास किये जाने का वक्त आ चुका है। लिहाजा टुकड़ों-टुकड़ों में किये जाने वाले प्रयासों के बजाय इस समस्या को समग्र रूप में देखना होगा। इसके लिये नागरिकों के स्तर पर भी व्यापक जागरूकता अभियान चलाना होगा अन्यथा हालात बेकाबू हो जाएंगे।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

चुनौतियों से जूझने को राष्ट्रीय रणनीति की दरकार

गुरबचन जगत

आजादी, जिसका आनंद हम विगत 75 सालों से ले रहे हैं और जो एक नाजुक शांति पर टिकी है, यह हमारे दुश्मनों की कमजोरियों की वजह से नहीं बल्कि हमारे पूर्वजों के संघर्ष की ताकत पर प्राप्त हुई है। देश की शांति सीमा पर चुपचाप अपना फर्ज निभा रहे महिला-पुरुष प्रहरियों की वजह से कायम है। यह शांति तब तक है जब तक हमारी सजगता और सामर्थ्य कायम है और इसको केवल राष्ट्र की सेना के आकार से नहीं मापा जा सकता। पिछले दो सालों में कोविड महामारी और इससे जुड़ी समस्याओं के चलते हमारा अधिकांश ध्यान आंतरिक मामलों पर केंद्रित रहा और यह सही भी था। ध्यान का अन्य मुख्य केंद्र चुनावों पर रहा। कदाचित मुख्य राजनीतिक दलों का सारा ध्यान अपनी असंवेदनशील किंतु सुचारु चुनावी मशीनरी के बूते 'भारत' जीतने पर ही केंद्रित है। वैसे साझा भलाई की खातिर चुनाव लड़ना और सत्ता-प्राप्ति जरूरी हो जाता है। हालांकि, इस भूल-भुलैया में फंसकर अपने पड़ोसियों और अंतरराष्ट्रीय पटल के मुख्य खिलाड़ियों से रिश्ता बनाए रखने पर जितना ध्यान देने की आवश्यकता है, नहीं हो पाया। दुनियाभर में उथल-पुथल के बीच भारी मंथन जारी है।

महामारी ने तमाम राष्ट्रों को सर्वप्रथम महामारी और इसके आर्थिक प्रभावों से निपटने को बाध्य किया है। ज्यादातर देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था बचाने की खातिर बाहरी आपूर्ति पर रोक लगाने और संरक्षणवादी उपायों का सहारा लिया है। क्या यूक्रेन युद्ध इसके सीधे परिणाम है या किसी बड़े खेल का हिस्सा, यह समय बताएगा। लेकिन पूरी तरह स्पष्ट दिख रही अफरा-तफरी वाली स्थिति में हम अपनी सतर्कता सुदृढ़ करने को क्या कर रहे हैं? नजर आने वाली एकमात्र पहल यूक्रेन में फंसे अपने छात्रों को वापस लाना है, वह भी बहुत देरी से की गई प्रतिक्रिया थी। आइए, अब अपने आस-पड़ोस पर और उनके लिए हमारी नीति पर नज़र डालें। चीन और पाकिस्तान को छोड़कर हमारे पड़ोस में अधिकांश मुल्क छोटे हैं। श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश, म्यांमार, भूटान और मालदीव लघु आकारीय हैं, लेकिन हमारे लिए जरूरी है कि उनके साथ व्यवहार 'बड़े भाई' वाला न रखकर बराबरी वाला दर्जा दें। पिछले अर्से में, हम उनके प्रति यथेष्ट आदर भाव न रखने वाला रवैया अपनाते रहे हैं। आज बेशक बांग्लादेश में कमोबेश भारत-मित्र सरकार है लेकिन नागरिक स्तर पर आपसी संबंध बनाने के लिए किसी खास राजनीतिक शख्सियत या दल पर निर्भरता नहीं होनी चाहिए।

श्रीलंका के साथ भी लगभग यही कहानी है, यहां तक कि हमने वहां शांति-

सेना भेजी थी और इस प्रक्रिया में हम सिंहल और तमिल, दोनों को 'सफलतापूर्वक' अपने विरुद्ध कर बैठे। आज हमारे सम्मुख न केवल श्रीलंका में बल्कि नेपाल और म्यांमार में भी चीन की तगड़ी उपस्थिति है। वर्तमान में नेपाल में खासी राजनीतिक उथल-पुथल है लेकिन न तो उसका वामदल, न ही दक्षिणपंथी पार्टी हमारे साथ खड़े दिखाई देते हैं। म्यांमार में हमारा झुकाव कभी नागरिक शासन तो कभी सैनिक तानाशाहों की तरफ झूलता रहा है। हमारे उत्तर-पूर्वी राज्यों के साथ रिवायती व्यापारिक संबंध रखने वाला म्यांमार आज भारत विरोधी विद्रोहियों की शरणस्थली बन चुका है। स्पष्टत: अपने पड़ोसी मुल्कों को लेकर हम एक दीर्घकालीन ऐसी कोई सामरिक नीति नहीं बना पाए जो प्रत्येक मुल्क से साथ साझा और विशेष अवयवों की पूर्ति करने वाली हो। इसी नीति में रक्षा, व्यापार, पर्यटन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान इत्यादि का समावेश और दीर्घ काल में सुधार करते रहने वाले उपाय अंतर्निहित होते। हम किसी बड़े रक्षा तंत्र का हिस्सा नहीं हैं। सवाल पैदा होता है कि क्या हम अपने ही अड़ोस-पड़ोस में अलग-थलग पड़ गए हैं और क्या हमारा कोई स्थाई साथी है भी या नहीं। लद्दाख में हुई हालिया चीनी घुसपैठ पर एक भी पड़ोसी मुल्क ने हमारे हक में बात नहीं की है। पाकिस्तान की बात करें तो साफ है कि 1947 से लेकर किसी सरकार ने परस्पर संदेह का पाट भरने की गंभीर कोशिशें नहीं की हैं, हालांकि पाकिस्तानी सेना और इसके जनरलों के रुख ने इस शुभेच्छा को असंभव बना रखा है।

परिदृश्य पर चीन की आमद से स्थिति और जटिल बन गई है। इस बाबत नेहरू के 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' के नारे से लेकर वाजपेयी की लाहौर यात्रा हो या मोदी की अप्रत्याशित पाकिस्तान यात्रा या फिर मनमोहन सिंह की पहल तमाम प्रयास बेकार रहे।

पिछले कुछ सालों से हम हिंद महासागर क्षेत्र में चीनी चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने रिश्ते अमेरिका के साथ मधुर बनाने में लगे हुए हैं। हमने 'क्वाड' नामक संगठन की सदस्यता ले ली है, जो न तो सैन्य गुट है व न ही आर्थिक संगठन। चीन और रूस ने ऐतिहासिक संधि कर ली है। पाकिस्तान पहले से चीन का निकट सहयोगी है। इस सब में हम कहां हैं? आत्म-निर्भर बनने में सालों-साल लगते हैं, तब तक अपने वजूद के लिए हमारे पास एक योजना और भरोसेमंद मददगार दोस्त होने जरूरी हैं। क्या हमारे पास इन दोनों में कोई है?

भारत में खामोश महामारी टीबी

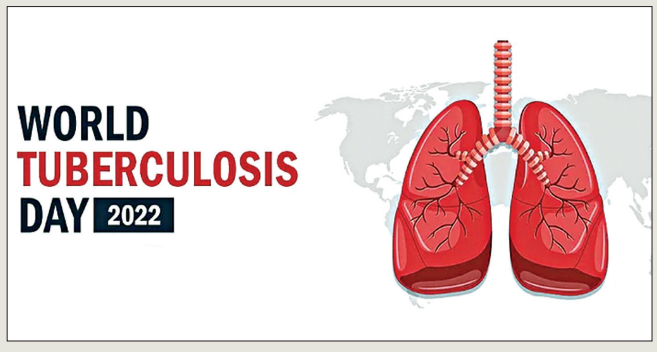

पवित्र मोहन

विश्व क्षय दिवस के मौके पर भारत में मिश्रित भावनाएं प्रकट हो रही हैं। आशा है कि कोविड महामारी अब खत्म हो रही है, लेकिन हम दूसरे संक्रमणों को कैसे देख रहे हैं, जो खामोशी से निरंतर साल-दर-साल लाखों भारतीयों के जीवन में कहर बरपा रहे हैं? टीबी हमारे लिए खामोश महामारी है, जो खबरों से दूर है, वह बढ़ रही है। महामारी के शुरुआती महीनों में कोविड काफी चर्चा में रहा, जिससे ट्यूबरकुलोसिस (टीबी) के नये संक्रमण और बढ़ता कुपोषण नजरअंदाज कर दिये गये। दोनों ही टीबी के खतरे के बढ़ते बोझ से जुड़े हैं। स्वास्थ्य सेवाओं में कमी और बढ़ते कुपोषण से आनेवाले वर्षों में अनुमान है कि टीबी से एक लाख अतिरिक्त मौतें होंगी। टीबी भारत में एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की टीबी रिपोर्ट-2021 के मुताबिक लगभग 18 लाख लोग टीबी संक्रमित हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, 2020 में टीबी से भारत में चार लाख मौतें हुई हैं। विश्वभर में टीबी के कुल नये मामलों में 26 प्रतिशत और मौतों में 34 प्रतिशत भारत से हैं।

ग्रामीण भारत के बड़े हिस्से में टीबी संक्रमित मरीज होते हैं लेकिन प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा केंद्र स्वास्थ्य सुविधाओं से महरूम हैं। पीएचसी में पर्याप्त कर्मचारी नहीं है और अनेक केंद्रों के पास आवश्यक उपचार क्षमता नहीं है। हालांकि, पीएचसी विश्वास बहाल करें तो वे बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। जरूरी है कि मरीजों की बेहतर देखभाल यानी संपूर्ण जांच व उनके साथ सम्मानजनक बर्ताव हो। भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के मुताबिक, दो या अधिक हफ्तों तक कफ रहने पर टीबी जांच कराना होता है। दशकों से यह निर्देश सावधान करता रहा है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। स्वस्थ दिखनेवाले मरीजों की बलगम जांच में टीबी की पुष्टि हो जाती है। टीबी के लक्षण नहीं दिखने या स्वस्थ दिखने की वजह से मरीज को जांच कराने से मना कर दिया जाता है।

ऐसे मरीज घर चले जाते हैं और कुछ हफ्तों या महीनों बाद वे गंभीर बीमारी के साथ लौटते हैं। अत: स्वस्थ दिखनेवाले मरीजों की टीबी जांच के लिए भी दिशा-निर्देश हों। टीबी के निदान में बड़ी बाधा चेस्ट रेडियोग्राफी, बलगम जांच और कार्टिरिज-बेस्ड न्यूक्लिक एसिड एंप्लीफिकेशन टेस्ट (सीबीएनएएटी) की उपलब्धता है। संभावित टीबी संक्रमित खुद की जांच कराने के लिए अधिक पैसा और समय खर्च करते हैं। कई प्राइवेट डॉक्टर आवश्यक टेस्ट के बिना ही इलाज शुरू कर देते हैं और सरकारी डॉक्टर बीमारी के प्रबंधन को नजरअंदाज कर देते हैं। मरीज कष्ट झेलता है और इससे दूसरों तक संक्रमण फैलता है। जांच-उपचार व्यवस्था, विशेष कर एक्स-रे मशीनों, बलगम की माइक्रोस्कोपिक टेस्टिंग और सीबीएनएएटी मशीनों को बढ़ाना होगा। हमें यह सुनिश्चित करना है कि आसपास एक्स-रे मशीन और कम लागत में जांच उपलब्ध हो।

बीते दशक में टीबी और दवा प्रतिरोध चिह्नित करना आसान हुआ है, लेकिन बलगम नमूने एकत्र करने की प्रक्रिया में बदलाव नहीं आया है। यह जिम्मेदारी मरीज पर होती है, जिसे पीएचसी तक पहुंचने के लिए कुछ किलोमीटर का सफर करना पड़ता है। सीएचसी या जिला अस्पताल या सीबीएनएएटी जांच के लिए मरीज को 50 किमी से अधिक की दूरी तय करनी पड़ जाती है। कई बार तो यह कहते हुए जांच से इनकार कर दिया जाता है कि फलां दिन के लिए पर्याप्त नमूने हो गये हैं या टेक्नीशियन उपलब्ध नहीं हैं या कार्टिरिज पूरी हो गयी है या मशीन उपलब्ध नहीं है। कोविड काल में यह समस्या और गंभीर हो गयी। इससे अनेक मरीज जांच कराने से वंचित रह गये। इसका आसान उपाय है कि नमूनों को स्वत: भेजा जाए यानी मरीज पीएचसी में बलगम नमूने को जमा कराएं और पीएचसी स्टाफ उसे जांच केंद्रों पर भेजें। इससे बीमारी की जांच और रोकथाम में सुधार होगा। टीबी संक्रामक के साथ-साथ सामाजिक बीमारी भी है। यह सीधे तौर पर जीवनयापन, पोषण, लिंग, जीवन संस्कृति से जुड़ी है। टीबी का संबंध असंगठित कार्यों और प्रवासी मजदूरी से भी है।

दक्षिणी राजस्थान में जहां हम फिजिशियन के रूप में कार्यरत हैं, वहां वर्षा और खाद्यान्न की कमी है। यहां बच्चों और वयस्कों में कुपोषण अधिक है। अनेक युवा रोजगार के लिए शहरों का रुख करते हैं। कम पोषण स्तर, जोखिम भरा कार्य, जैसे-पत्थर कटाई, खनन, और भीड़भाड़ में आवास जैसी वजहों से कामगारों में टीबी का जोखिम रहता है। एक के संक्रमित होने से पूरा परिवार संक्रमित हो सकता है। इससे कार्यक्षमता प्रभावित होती है और बीमारी बढ़ती है और अंतत: मौत हो जाती है। टीबी कार्यक्रम की पोषण योजना में पोषण हेतु आर्थिक मदद दे जाती है। हालांकि, संतुलित भोजन के लिए यह राशि अपर्याप्त है। पोषणयुक्त भोजन के लिए कैश ट्रांसफर, पीडीएस के माध्यम से पोषक खाद्यान्न देने के साथ-साथ खेती और मुर्गीपालन को बढ़ावा देने की जरूरत है। कार्यस्थलों की स्वच्छता जरूरी है ताकि फेफड़े का संक्रमण या सिलिकोसिस न हो। बीते दशक में टीबी के राष्ट्रीय कार्यक्रम में कई पहल हुई है, नयी जांच, पोषण के लिए कैश ट्रांसफर और नवीनतम दवाओं से इलाज की अवधि में कमी आयी है। हालांकि, कार्यक्रम को बुनियादी तौर मजबूत बनाना होगा। ध्यान रखना चाहिए कि आज भी औसतन रोजाना 1200 लोगों की टीबी से मौत होती है।

गर्मियों में इन्हें बनाएं डाइट का हिस्सा!

हमारे शरीर में ठीक से काम करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पोषक तत्वों में से एक है पानी। यह शरीर के कई कार्यों को नियंत्रित करता है और इसी वजह से, पोषण विशेषज्ञ बार-बार शरीर को हाइड्रेट करने के लिए पर्याप्त पानी पीने की सलाह देते हैं। जब तापमान बढ़ने लगता है, तो हमारा शरीर कई तरह के बदलावों से गुजरता है, जिनमें से एक है पानी की कमी हो जाना। गर्मियों में हमें पसीना ज्यादा आता है, इसलिए शरीर से पानी तेजी से कम होता है। आमतौर पर सभी को रोजाना दिन में 8 गिलास पानी पीने की सलाह दी जाती है, लेकिन कई लोग यह नहीं जानते कि सिर्फ पानी पीना ही काफी नहीं होता। आप शरीर में पानी की मात्रा को बढ़ाने के लिए तरबूज, टमाटर, खीरा, स्ट्रॉबेरीज आदि जैसी सब्जियों और फलों को डाइट में शामिल कर सकते हैं। ऐसी कई सब्ज़ियां और फल हैं, जिनमें पानी की मात्रा कहीं ज्यादा होती है।

तरबूज

यह बेहद ही स्वादिष्ट फल है, जिसे गर्मी के मौसम में सभी खाना पसंद करते हैं। तरबूज में 92 प्रतिशत पानी होता है जो हीटस्ट्रोक से लड़ने में मदद करता है। साथ ही यह अमीनो एसिड्स के उत्पादन को बढ़ावा देता है, दो इम्यूनिटी को बूस्ट करने का काम करते हैं।

पालक

यह पत्तेदार हरी सब्ज़ी में 93 प्रतिशत पानी होता है और यह आयरन से भरी होती है। यह हाइड्रेशन के लिए अच्छी मानी जाती है और इम्यूनिटी को भी मज़बूत बनाए रखी है।

जुकीनी

इस सब्जी को हाल ही में सुपरफूड्स की लिस्ट में शामिल किया गया है। जुकीनी में 95 प्रतिशत पानी होता है। यह सब्जी भी कई तरह के एंटीऑक्सीडेंट्स, फाइबर, जरूरी खनीज और विटामिन्स से भरपूर होती है, जो पाचन में सुधार करने का काम करती है।

खीरा

गर्मियों में हर कोई खीरा खाना इसलिए पसंद करता है क्योंकि इसके कई कारणों में से एक यह है कि इसमें पानी की मात्रा बहुत अधिक होती है, जो लगभग 95 प्रतिशत के करीब है। सिर्फ इतना ही नहीं खीरा पोटैशियम से भरपूर होता है, जो हीटस्ट्रोक से बचाता है। इसके अलावा खीरा दिमाग़ की सेहत को भी बढ़ावा देता है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें एंटी-इंफ्लामेटरी गुण होता है, जिसे फिसेटिन कहते हैं। यह मस्तिष्क को बेहतर काम करने के लिए बढ़ावा देता है।

टमाटर

टमाटर में 94 प्रतिशत पानी होता है और इसे सलाद, सब्जी और यहां तक कि जूस में भी सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। टमाटर विटामिन-ए से भरपूर होता है, जो दृष्टि हानि और उच्च रक्तचाप के जोखिम को कम कर सकता है। साथ ही त्वचा के सभी तरह की दिक्कतों में सुधार भी कर सकता है।

ब्रोकली

अगर आप ब्रोकली के फैन हैं, तो यह आपके लिए खुशी की ख़बर है। इस सब्जी में 90 प्रतिशत पानी होती है और साथ ही विटामिन-ए और के, कैल्शियम, फॉलिक एसिड्स और आयरन से भरपूर भी होती है।

स्ट्रॉबेरीज

इस फल का वज़न इसमें मौजूद पानी की वजह से होता है। स्ट्रॉबेरीज़ में 91 प्रतिशत पानी होता है। यह स्वादिष्ट बेरीज एंटीऑक्सीडेंट्स, फाइबर, विटामिन-सी, फोलेट और मैंगनीज से भरा होती हैं। यह सभी पोषक तत्व डायबिटीज़, कैंसर और कई तरह के दिल से जुड़ी बीमारियों से लड़ने का काम करते हैं।

सेब

दिन में एक सेब खाने से आप डॉक्टर से दूर रह सकते हैं- हमें यक़ीन है कि आपने यह कहावत जरूर सुनी होगी। यह कहावत पूरी तरह सच भी है क्योंकि सेब में 86 प्रतिशत पानी होता है और यह हर मौसम में उपलब्ध होते हैं। इसके अलावा यह फल कई विटामिन्स और खनीज से भरपूर भी होता है। सेब दिल के स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है।

मशरूम

मशरूम का नाम पढ़कर आप चौंक गए होंगे, लेकिन यह भी काफी हाइड्रेशिंट होता है। विटामिन-बी2 और डी जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होने के अलावा इसमें 92 प्रतिशत पानी की मात्रा होती है। जब आप इसे रोजाना खाते हैं, तो थकावट दूर करने में भी मदद मिलती है।

हंसना मना है

शराबी: डॉक्टर साहब, चेकअप करवाना है? डॉक्टर: क्या समस्या है? शराबी: 1-2 दिन से लीवर में दर्द हो रहा है। डॉक्टर : दारू पीते हो? शराबी: हां, साहब पर एक ही पैग बनाना, अभी मन नहीं है।

गर्लफ्रेंड : क्या तुम मुझसे प्यार करते हो? बॉयफ्रेंड - हां। गर्लफ्रेंड: लेकिन तुम्हें तो मेरी कोई परवाह ही नहीं है। बॉयफ्रेंड: प्यार करने वाले किसी की परवाह नहीं करते।

पति दारू पीकर रात को घर लेट आया, पत्नी हाथ में झाड़ू लेकर सामने खड़ी थी, पति: कितना काम करेगी तू? रात के दो बजे हैं, सोना नहीं है क्या? कुछ तो अपना ख्याल कर। ये सुनकर बेचारी पत्नी की आंखों में आंसू आ गए। पति मन ही मन में-आज तो बच गया।

लड़की: अगर मैं मर गई तो तुम क्या करोगे? लड़का: शायद मैं भी मर जाऊं। लड़की: क्यों? लड़का: कभी-कभी ज्यादा खुशी भी जानलेवा होती है।

टीचर: लड़कियां अगर पराया धन होती है तो लड़के क्या होते हैं? सोनू: सर लड़के चोर होते हैं। टीचर: वह कैसे? क्योंकि चोरों की नजर हमेशा पराए धन पर होती है।

कहानी - दूरदर्शी सुमन

प्रिया एक अमीर और सुंदर लड़की थी, उसके पास पहनने के लिए ढेर सारे सुंदर कपड़े थे। लेकिन उसका मन किसी भी कपडे से बहुत जल्दी भर जाता था। दो-चार बार पहनकर ही वह अपने सुंदर-सुंदर कपडे भी फेंक देती थी। उसको किसी भी चीज़ की कीमत का अहसास नहीं था। खाना भी वह आधा खाती थी और आधा मेज पर ही छोड देती थी। उसके घर में एक नौकरानी थी-सुमन। सुमन एक बहुत ही समझदार लड़की थी। वह पूरा दिन प्रिया का सामान संभालकर रखती रहती थी। जो खाना प्रिया मेज पर छोड़ देती थी, उसमें से कुछ वह खा लेती थी और कुछ गरीब बच्चों को दे देती थी। जो कपडे प्रिया फेंक देती थी, उन्हें सुमन अपने लिए रख लेती थी। उनसे वह अपने लिए अच्छी-अच्छी पोशाकें सिल लेती थी। एक दिन प्रिया से मिलने के लिए एक युवक आया। उसने प्रिया को उसको एक मित्र के यहाँ देखा था। प्रिया उसे अच्छी लगी। इसीलिए वह प्रिया के माता-पिता से मिलकर बात करने आया था। वह प्रिया से विवाह करना चाहता था। उस युवक ने अपना नाम समीर बताया। समीर एक सभ्य और अच्छा लड़का था। प्रिया के माता-पिता को वह पसंद था। उन्होंने समीर को आदर से बैठाया और सुमन से चाय लाने को कहा। सुमन जब चाय लेकर आई तो उसने एक बहुत ही सुंदर पोशाक पहनी हुई थी। यह पोशाक उसने प्रिया की पुरानी पोशाकों से बनाई थी। उस पोशाक में सुमन बहुत ही अच्छी लग रही थी। प्रिया ने जब सुमन को देखा तो समीर से बोली, ये हमारी नौकरानी है-सुमन। मेरे पुराने कपडे पहनकर अपने आपको बहुत सुंदर समझ रही है। समीर ने देखा कि सुमन की पोशाक कहीं से भी पुरानी नहीं लग रही थी। उसने प्रिया से पूछा, तुम ऐसा क्यों कह रही हो ? यह पोशाक तो एकदम नई है। तब प्रिया ने उसे बताया कि उसका मन जब किसी कपड़े से भर जाता है तो वह उसे फेंक देती है। सुमन बस वही पुराने कपडे पहनती है। उसके पुराने कपड़ों को जोड़कर अपने लिए पोशाकें बनाती रहती है। कभी-कभी तो मेरा जूठा खाना तक बाहर के गंदे बच्चों को खिला देती है। बेचारी के पास नई चीज़ों के लिए पैसे नहीं हैं न। समीर ने महसूस किया कि सुमन एक बहुत समझदार और दूरदर्शी लड़की है। जबकि प्रिया एकदम बिगड़ी हुई और खर्चीली। उसने प्रिया के माता- पिता से कहा, आपकी बेटी बहुत सुंदर है, लेकिन घर संभालने के लिए जो गुण होने चाहिए वह उसमें नहीं है। सुमन में ये सभी गुण हैं, इसीलिए मैं प्रिया से नहीं बल्कि सुमन से विवाह करना चाहता हूं। प्रिया के माता-पिता का दु:ख तो हुआ लेकिन वे सुमन के लिए खुश थे। वे जानते थे कि सुमन कितनी अच्छी है। प्रिया को यह बात इतनी बुरी लगी कि ठसने अपने-आपको पूरी तरह बदल डाला। कुछ दिनों के बाद समीर फिर प्रिया के घर आया। सुमन ने उसे बताया कि प्रिया बदल गई है। समीर ने प्रिया से कहा, प्रिया, मैं तो सचमुच सिर्फ तुम्हें पसंद करता हूँ। सुमन से विवाह की बात तो बस एक नाटक था, जो हम सबने मिलकर किया था, तुम्हें बदलने के लिए। हम चाहते थे कि तुम्हें अपनी गुलती का अहसास हो। मैं खुश हूं कि तुम बदल गई हो। अब बताओ, तुम मुझसे विवाह करोगी? प्रिया खड़ी-खड़ी शरमा रही थी और सुमन दोनों को देखकर बहुत खुश थी।

8 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आज आपकी अपने पार्टनर से मुलाकात हो सकती है। पति-पत्नी के बीच तनाव हो सकता है। अपनी भावनाएं पार्टनर पर ना थोपें। पार्टनर की कोई बात आपको परेशान कर सकती है।

वृषभ

पार्टनर के साथ बाहर घूमने जा सकते हैं। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पार्टनर को लेकर किसी के साथ विवाद हो सकता है। आज आपके खर्चे बढ़ेंगे।

मिथुन

आज के दिन शुरू हुई रिलेशनशिप लंबे समय तक चल सकती है। पति-पत्नी के बीच मनमुटाव हो सकता है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। पार्टनर को खुश करने के लिए उपहार दे सकते हैं।

कर्क

पति-पत्नी के बीच आपसी सहयोग बना रहेगा। आज सिंगल लोगों को किसी खास इंसान से मुलाकात हो सकती है। पार्टनर की भावनाओं को समझने की कोशिश करें।

सिंह

आज आपके प्रेमी के साथ रिश्तें मधुर होंगे। आज शुरू होने वाली रिलेशनशिप ज्यादा समय तक नहीं चलेगी। प्रेम संबंधों को सुधारने का प्रयास करें, जीवनसाथी से सोच-समझकर मजाक करें।

कन्या

आपको सफलता मिल सकती है। अविवाहित लोगों की शादी तय हो सकती है। सोच-समझकर कुछ बोले वरना आपकी बातों का गलत मतलब निकाला जा सकता है।

तुला

आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है। आप पार्टनर से सुख मिल सकता है। कोई अपोजिट जेंडर वाला व्यक्ति आपके करीब आ सकता है। आज पति-पत्नी के बीच तालमेल ठीक रहेगा।

वृश्चिक

पार्टनर को लेकर मन में नेगेटिव बातें चलेगी। आज के दिन शुरू हुई पार्टनरशिप लंबे समय तक चल सकती है। आज लव लाइफ को लेकर कोई बड़ा फैसला ना लें।

धनु

एक्स्ट्रा मेरिटल अफेयर होने की संभावना है। कोई अपोजिट जेंडर वाला व्यक्ति आपकी रिलेशनशिप में परेशानी पैदा कर सकता है। पार्टनर से मन मुटाव हो सकता है।

मकर

आज पार्टनर के साथ समय नहीं बिता पाएंगे। किसी काम से शहर से बाहर जा सकते है। प्रेमी के साथ बिताये हुए पल याद करेंगे। पति-पत्नी के बीच मनमुटाव हो सकता है।

कुम्भ

आप किसी को प्रपोज करना चाह रहे हैं तो कर सकते हैं। लव लाइफ के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा। पार्टनर के साथ घूमने जा सकते हैं। आपका प्रपोजल स्वीकार किया जा सकता है।

मीन

पति-पत्नी के रिश्ते में मजबूती आ सकती है। अपोजिट जेंडर वालों से आकर्षण बढ़ सकता है। आज के दिन शुरू हुई रिलेशनशिप लंबे समय तक चल सकती है। दोस्ती प्यार में बदल सकती है।

शादी की खबरों के बीच टूटा श्रद्धा कपूर का दिल

श्रद्धा कपूर पिछले काफी दिनों से लाइमलाइट में नहीं हैं। हाल ही में उन्होंने रणबीर कपूर के साथ एक फिल्म की शूटिंग शुरू की है। जिसके गाने का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। अब एक्ट्रेस को लेकर एक खबर सामने आ रही है, जिसमें दावा किया जा रहा है कि श्रद्धा कपूर का अब ब्रेकअप हो गया है। कुछ समय पहले इनकी शादी के भी चर्चे थे, लेकिन अब श्रद्धा के अलग होने की खबर आ रही है।

चार साल बाद बॉयफ्रेंड से अलग किए रास्ते!

बॉलीवुड | गपशप

चार साल का रिश्ता टूटा

श्रद्धा ने कभी भी अपने रिलेशनशिप स्टेटस को रिवील नहीं किया, लेकिन बीटाउन में ऐसे चर्चे रहे हैं कि वह फेमस फोटोग्राफर रोहन श्रेष्ठ के साथ रिश्ते में हैं। दोनों एक-दूसरे को कॉलेज के दिनों से जानते हैं और खबरें तो यहां तक आई कि दोनों जल्द शादी के बंधन में भी बंधने वाले हैं। लेकिन इन सब अटकलों के बीच खबर है कि 4 साल तक एक दूसरे को डेट करने के बाद दोनों ने अपनी राहों को अलग कर ब्रेकअप कर लिया है।

जनवरी से चल रही थी खटपट

पिंकविला की एक रिपोर्ट में इस बात का दावा किया गया है कि दोनों की राहें अब जुदा हो गई हैं। दोनों के करीबी सूत्र ने पोर्टल को बताया कि रोहन श्रेष्ठ गोवा में श्रद्धा कपूर के बर्थडे सेलिब्रेशन का हिस्सा भी नहीं थे। रिपोर्ट के मुताबिक, दोनों के बीच में इस साल की शुरुआत यानी जनवरी 2022 से ही खटपट चल रही थी और फरवरी में दोनों ने अलग होने का फैसला कर लिया। हालांकि उनके ब्रेकअप का क्या कारण है? इसका अभी खुलासा नहीं हुआ है और अगर न ही ब्रेकअप के बारे में दोनों में से किसी ने ऑफिशयली तौर पर कुछ कहा है।

श्रद्धा की फिल्में

'आशिकी-2' और 'एक विलेन' जैसी फिल्मों में अपनी एक्टिंग से लोगों के दिलों में खास बना चुकीं श्रद्धा कपूर इन दिनों कमिटमेंट्स में बिजी हैं। वह फिलहाल रणबीर कपूर के साथ लव रंजन की अगली फिल्म की शूटिंग कर रही हैं।

अरेंज्ड में एक साथ दिखेंगे त्रिधा और ऋत्विक

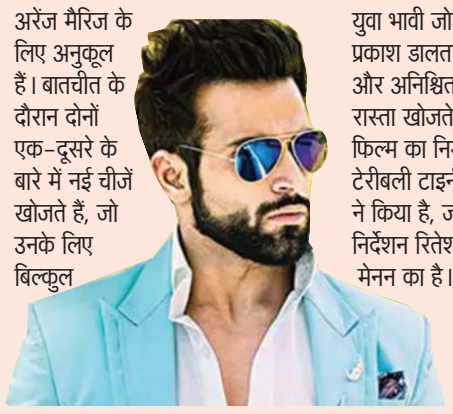

वेब सीरीज आश्रम में बबीता का किरदार निभाकर चर्चा में आयीं एक्ट्रेस त्रिधा चौधरी अब एक शादी की तैयारी कर रही लड़की के किरदार में नजर आएंगी। उनका यह किरदार शॉर्ट फिल्म अरेंज्ड में नजर आएगा, जिसमें उनके साथ जाने-माने कलाकार ऋत्विक धनजानी नजर आएंगे। अमेजन के शॉपिंग ऐप पर मौजूद मिनी-टीवी पर किया जा रहा है, जिसके लिए किसी सब्सक्रिप्शन की जरूरत नहीं है। शॉपिंग ऐप पर जाकर मिनी-टीवी सेक्शन में फिल्म मुफ्त देखी जा सकती है। अरेंज्ड ऋचा (त्रिधा चौधरी) और तरुण (ऋत्विक धनजानी) की कहानी है, जो अपने माता-पिता की मौजूदगी में यह पता लगाने के लिए मिलते हैं कि क्या वे अरेंज मैरिज के लिए अनुकूल हैं। बातचीत के दौरान दोनों एक-दूसरे के बारे में नई चीजें खोजते हैं, जो उनके लिए बिल्कुल नया है। क्या इस नई जानकारी से दोनों जुड़ेंगे या उन्हें झटका लगेगा? अरेंज्ड ऐसे युवा भावी जोड़ों के जीवन पर प्रकाश डालता है, जो कुछ बाधाओं और अनिश्चितताओं के बीच अपना रास्ता खोजते हैं। शॉर्ट फिल्म का निर्माण टेरीबली टाइनी टेल्स ने किया है, जबकि निर्देशन रितेश मेनन का है।

ऋत्विक धनजानी पवित्र रिश्ता शो में अर्जुन का किरदार निभाकर चर्चा में आये थे।

बॉलीवुड | मन की बात

जैकी श्रॉफ की बेटी पर चढ़ा बोल्डनेस का खुमार

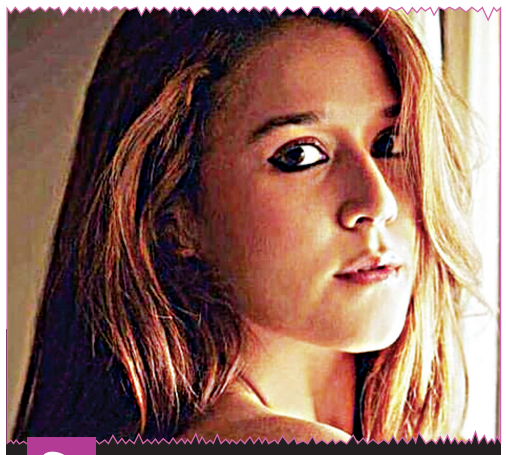

दिग्गज एक्टर जैकी श्रॉफ की बेटी कृष्णा श्रॉफ बेशक एक्टिंग की दुनिया से दूर रहती हैं, लेकिन उनकी पॉप्युलैरिटी भी किसी एक्ट्रेस से कम नहीं है। कृष्णा अक्सर अपने लुक्स के कारण सुर्खियों में रहती हैं। आज वह किसी पहचान की मोहताज नहीं रह गई हैं। उनके चाहने वाले भी दुनियाभर में मौजूद हैं। कृष्णा का नाम उन स्टार किड्स की लिस्ट में शुमार हैं, जिन्होंने बॉलीवुड में डेब्यू के बिना भी स्टारडम हासिल कर लिया है। इस बात में कोई दोराय नहीं है कि कृष्णा फिटनेस फीक हैं। वह लगभग अपने हर पोस्ट में अपनी टोंड बॉडी फ्लॉन्ट करती दिखती हैं। इस बार उन्होंने अपना एक वीडियो पोस्ट किया है कि, जिसमें वह अपने फिगर के साथ ही रिवीलिंग ड्रेस भी फ्लॉन्ट करती दिख रही हैं। इस वीडियो में कृष्णा ने बैकलेस हाई थाई स्लिट गाउन कैरी किया है। इसमें वह अपनी टोन्ड बॉडी दिखाते हुए हॉट लुक भी फ्लॉन्ट कर रही हैं। उन्होंने अपने इस लुक को कंप्लीट करने के लिए हाई हील्स पहनी है। साथ उन्होंने बालों को हाफ खुला छोड़ा है और न्यूड मेकअप किया है। इस लुक में कृष्णा बेहद हॉट दिख रही हैं। कृष्णा के इस लुक ने भी सभी का दिल जीत लिया है। कुछ मिनटों में ही उनके इस वीडियो पर हजारों लाइक्स आ चुके हैं। वहीं, फैंस एक बार फिर से उनके परफेक्ट फिगर को देख हैरान रह गए हैं। अब कृष्णा के चाहने वालों ने उन्हें हॉट बताते हुए कई कमेंट्स किए हैं

2032 तक आसमान में महल बना देगा चीन लोगों को देगा छुट्टियां मनाने का न्यौता !

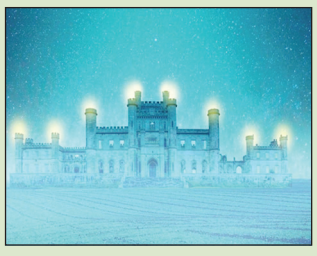

चीन ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों में जितनी प्रगति कर ली है, वो बड़े-बड़े देशों के लिए भी खतरे की घंटी है। अमेरिकन स्पेस प्लेयर्स एलन मस्क और जेफ बेजॉस को टक्कर देते हुए चीन जल्दी ही अंतरिक्ष पर्यटन की दुनिया में बड़ा मुकाम हासिल करने वाला है। माना जा रहा है कि चीन अंतरिक्ष में महल तैयार कर रहा है, जहां लोगों के घूमने का मौका मिलेगा। नासा के स्पेस शटल और रूस के बायकोनुर लॉन्च फैसिलिटी के खत्म होने के बाद इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन के लिए दक्षिणी कज़ाकिस्तान ही एक लाइफलाइन बची है। यूक्रेन वॉर की वजह से भी असर पड़ा है। स्पेस प्लेयर्स को लगे झटके के बाद अब चीन का टियांगगोंग स्पेस स्टेशन ही सबसे मजबूत स्थिति में हैं, जिसका इस्तेमाल चीन इकोनॉमिक सेक्टर में भी करने के मूड में है। एक रिपोर्ट के मुताबिक चीन का Tiangong space station चूंकि अप्रैल 2021 में लॉन्च हुआ था, तो वो अगले 10-15 साल की बेहतरीन सर्विस लाइफ लेकर चल रहा है। हालांकि इसके पीछे वजह वैज्ञानिक है, लेकिन चाइनीज़ स्पेस एजेंसी इससे पैसा कमाने का मौका नहीं छोड़ना चाहती। उनकी ओर से 10 साल के अंदर टियांगोंग को पर्यटन के लिहाज से खोलने की घोषणा की गई है। चीन के लिए ये प्रोजेक्ट घाटे का भी नहीं होगा क्योंकि इस वक्त चीन में अच्छी-खासी संख्या में अरबपति लोग हैं, जो जिंदगी में एक बार जरूर अंतरिक्ष में सैर पर जाना चाहेंगे। यही वजह है कि उनके Tiangong space station को आसमानी महल भी कहा जा रहा है। ताजा रिकॉर्ड्स भी कहते हैं कि इस वक्त चीन में अमेरिका से ज्यादा अरबपति मौजूद हैं। अमेरिका में जहां 716 अरबपति हैं, वहीं चीन में ये संख्या 1133 हैं। चीन इस प्रोजेक्ट के लिए दोबारा इस्तेमाल किए जाने वाले स्पेसक्राफ्ट भी बना रहा है, जिससे धरती और अंतरिक्ष के चक्कर लगाए जा सकें। वैसे कॉमर्शियल स्पेस स्टेशन के लिए दूसरी कंपनियां भी काम कर रही हैं, ऐसे में इसका खर्च थोड़ा कम होने की उम्मीद है। फिर भी अगली कुछ पीढ़ियों तक ये सिर्फ अमीर लोगों के ही बस की बात होगी।

अजब-गजब | भगवान का चमत्कार या कुछ और

तीन बार फांसी के फंदे पर लटकाने के बाद भी जिंदा बच गया था ये शख्स!

दुनिया में जब किसी गुनहगार को सजा ए मौत दी जाती है तो उसका मरना निश्चित माना जाता है। फांसी की सजा सुनते ही गुनहगार की सांसे तेजी से चलने लगती है। उसे पता होता है कि उसका बचना अब नामुमकिन है। लेकिन क्या आपको पता है कि एक शख्स को एक बार नहीं बल्कि तीन बार फांसी पर लटकाया गया लेकिन वह हर बार बच गया। हम बात कर रहे हैं जॉ ली की। जॉन ली को हत्या के जुर्म में फांसी की सजा सुनाई गई थी। उसे तीन बार फांसी पर लटकाया गया लेकिन उसकी मौत नहीं हुई।

लगा था हत्या का आरोप

दरअसल, जॉन ली नाम का एक शख्स एक अमीर महिला के घर में नौकरी करता था। एक दिन महिला के घर में चोरी हो गई। इसके बाद महिला ने जॉन ली को नौकरी से निकाल दिया। 15 नवंबर 1884 को इंग्लैंड के एक छोटे से गांव में जॉन को एक महिला के कत्ल के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि जॉन ली खुद को बेकसूर बता रहे थे लेकिन सबूत उनके खिलाफ थे। ऐसे में पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

जॉन ली को सुनाई मौत की सजा

मौका ए वारदात जॉन ली के अलावा और कोई नहीं था। साथ ही उनके हाथों पर कट के निशान भी लगे थे, जो इसी ओर इशारा कर रहे थे कि कत्ल जॉन ली ने ही किया है। ऐसे में ब्रिटिश पुलिस ने ज्यादा दिमाग और समय ना लगाते हुए जॉन को ही गुनाहगार समझकर कोर्ट में केस शुरू कर दिया। कोर्ट ने जॉन ली को मौत की सजा सुनाई।

तीन बार लटकाया गया फांसी पर

23 फरवरी 1885 को जॉन ली को फांसी के फंदे तक ले जाया गया। जल्लाद ने उसे फांसी देने के लिए हैण्डल खींचा, लेकिन हैरानी की बात यह रही कि जॉन के नीचे मौजूद लकड़ी का दरवाजा खुला ही नहीं। जल्लाद ने कई बार हैण्डल खींचा, लेकिन दरवाजा नहीं खुला और जॉन फांसी से बच गया। इसके बाद दूसरे दिन फिर से उसे फांसी देने के लिए लाया गया लेकिन दूसरे दिन भी दरवाजा नहीं खुला। ऐसा तीन बार हुआ। तीन बार जॉन ली को फांसी पर लटकाया गया लेकिन फांसी नहीं लग पाई।

जांच में सामने आई यह बात

इसके बाद यह मामला हाई अथोरिटी के पास पहुंचा। जांच शुरू हुई कि आखिर फांसी की सजा तीन बार कैसे रुक सकती है। जांच में पता चला कि एक लोहे के टुकड़े की वजह से दरवाजा पूरी तरह से जाम हुआ पड़ा था इसीलिए वो खुल नहीं रहा था। इसके बाद लोगों को यही लगा कि जॉन को भगवान पर भरोसा था और भगवान ने ही उसकी मदद की है। इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार ने जॉन की सजा माफ कर दी थी। कोर्ट का कहना था कि जॉन ने तीन बार मौत की सजा को महसूस किया है और इतनी सजा उसके लिए काफी है।

योगी कैबिनेट में घटा लखनऊ का जलवा सात में सिर्फ एक को मिला मंत्री पद

» बृजेश पाठक को बनाया गया उपमुख्यमंत्री, दिनेश शर्मा, मोहसिन रजा समेत कई को नहीं मिला पद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। योगी सरकार के दूसरे कार्यकाल की नयी कैबिनेट में राजधानी लखनऊ का जलवा घट गया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का संसदीय क्षेत्र होने के बाद भी यहां मंत्रियों के कोटे में कटौती कर दी गई है। यहां से जीते सात भाजपा विधायकों में सिर्फ एक को मंत्री पद मिला है। केवल बृजेश पाठक को जगह मिल पाई है। उन्हें उपमुख्यमंत्री बनाया गया है। पिछले योगी सरकार में वे कानून मंत्री बनाए गए थे। इस बार उनका कद बढ़ाया गया है।

2017 के विधान सभा चुनाव जीतने के बाद विधायक व एमएलसी न होने के बाद भी डा. दिनेश शर्मा को उपमुख्यमंत्री का ओहदा दिया गया था और उस समय वह लखनऊ के महापौर का दूसरा कार्यकाल चला रहे थे। पूर्वी क्षेत्र से विधायक आशुतोष टंडन के अलावा बसपा छोड़कर भाजपा में शामिल हुए बृजेश पाठक को मध्य सीट से भाजपा का टिकट देने के साथ मंत्री बनाया गया था। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुईं डा. रीता बहुगुणा जोशी को कैंट सीट से टिकट देने के साथ कैबिनेट मंत्री बनाया गया था। विधान परिषद सदस्य डा. महेंद्र सिंह को भी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बनाया गया था। उनका भी नाता लखनऊ से ही था और आलमबाग क्षेत्र से सभासद भी रह चुके थे। पूर्व मंत्री नसीमुद्दीन की टिप्पणी के बाद घर की देहरी से बाहर निकलीं स्वाती सिंह को भाजपा ने सरोजनीनगर सीट से उतारा था और जीत के बाद उन्हें भी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) का दर्जा दिया गया था। मोहसिन रजा का चेहरा भी अचानक सामने आया था। पुराने शहर से ताल्लुक रखने वाले और खेल से राजनीति में आए मोहसिन रजा को भी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बनाया गया था। इस बार बृजेश पाठक को छोड़कर अन्य 2017 में शपथ लेने वाले सीन से गायब थे। इस बार बृजेश पाठक के अलावा किसी को मंत्री बनने का सुख नहीं मिल पाया है।

नितिन को मिला पद, नरेश का बढ़ा कद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हरदोई। पूर्व सांसद नरेश अग्रवाल एक बार फिर हरदोई नरेश के रूप में सामने आए हैं। दल कोई भी रहा हो नरेश अग्रवाल का कद बढ़ता ही गया। हरदोई सदर सीट पर अपने पुत्र नितिन अग्रवाल को जिताकर न केवल उन्होंने रिकार्ड कायम किया बल्कि सभी कयासों को किनारे कर नितिन अग्रवाल प्रदेश सरकार में मंत्री भी बने।

» पूर्व सांसद नरेश अग्रवाल के पुत्र हैं नितिन

» विधान सभा चुनाव में हरदोई में कायम रखा दबदबा

1974 में बाबू श्रीश चंद्र अग्रवाल विधायक बने थे और फिर उनके पुत्र नरेश अग्रवाल ने 1980 में राजनीतिक विरासत संभाली और पहली बार विधान सभा में कदम रखा। 1989 में उन्होंने दिखा दिया कि हरदोई सदर पर दल नहीं उन्हीं का कब्जा है। कांग्रेस ने उनका टिकट काटा तो निर्दलीय चुनाव जीता। 1991 की राम-लहर में भी उन्होंने अपनी पकड़ का अहसास कराया था। 1993 के चुनाव में सपा व बसपा गठबंधन को हराया। 1996 में भी अपनी विजय पताका फहराई। वर्ष 2002 में वह समाजवादी पार्टी से विधायक चुने गए। वर्ष 2007 में वे बसपा में शामिल हो गए। बसपा से वह राज्यसभा पहुंचे तो उनके पुत्र नितिन अग्रवाल 2008 के उपचुनाव में पहली बार विधायक चुने गए। फिर 2012 में एक बार फिर वह सपा में आए और सपा ने भी उन्हें राज्यसभा भेजा तो नितिन अग्रवाल प्रदेश की सरकार में मंत्री भी बने। 2017 में जब पूरे जिले में भाजपा जीती तो सदर से सपा से नितिन जीते लेकिन कुछ समय बाद वह भाजपा में शामिल हो गए। नितिन अग्रवाल विधान सभा के उपाध्यक्ष बने। उन्होंने अपनी दम दिखाई और विधान सभा चुनाव में तो आठों सीट जीत गईं। विधान परिषद चुनाव में नरेश अग्रवाल ने सपा प्रत्याशी का पर्चा वापस करा भाजपा प्रत्याशी को निर्विरोध एमएलसी बनवा दिया।

पटाखा फैक्ट्री में धमाका, महिला समेत दो झुलसे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बाराबंकी। रामसनेहीघाट कोतवाली के धरौली गांव के बाहर स्थित पटाखा फैक्ट्री में शुक्रवार को विस्फोट हो गया। हादसे में काम कर रही एक महिला समेत दो लोग गंभीर रूप से झुलस गए। पलीता के बारूद में छू जाने से विस्फोट होने की आशंका जताई जा रही है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल भेजा।

घायलों में फतेहगंज के 35 वर्षीय शिवकुमार उर्फ लाली व धरौली की 16 वर्षीय अलेशा शामिल हैं। नायब तहसीलदार प्रज्ञा द्विवेदी, सीओ रघुवीर सिंह, कोतवाल अजय त्रिपाठी ने घटना स्थल का जायजा लिया और घायलों का अस्पताल पहुंचकर हाल जाना। धरौली की जिस फैक्ट्री में विस्फोट हुआ है उसमें भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री रखी हुई है। सवाल यह है कि जब इस समय शादी आदि समारोह नहीं हो रहे हैं। ऐसे में यह विस्फोटक सामग्री किसलिए रखी गई थी।

शहीद का दर्जा दिलाने को लेकर बवाल, उग्र लोगों ने किया पथराव

» सिक्किम में तैनात था जवान

» बहन को सरकारी नौकरी और एक करोड़ मुआवजा देने की मांग

» वाहनों में तोड़फोड़, हाईवे और रेलवे ट्रैक किया जाम, पुलिस तैनात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गोरखपुर। जनपद के राघोपट्टी निवासी आर्मी में हवलदार के पद पर तैनात धनंजय यादव का शव घर आते ही बवाल हो गया। शहीद का दर्जा, बहन को सरकारी नौकरी और एक करोड़ मुआवजा देने की मांग को लेकर स्वजनों के साथ गांव के लोगों ने भोपा बाजार में हाईवे व रेलवे ट्रैक जाम कर दिया। डीएम मौके पर पहुंचे तो भीड़ में शामिल उपद्रवियों ने पथराव कर दिया।

जिसमें चौरीचौरा थानेदार समेत 10 पुलिस कर्मी घायल हो गए। बाद में अतिरिक्त पुलिस बल मौके पर पहुंचा और आंसू गैस के गोले दागकर हालात पर काबू पाया गया। गुस्साई भीड़ ने पुलिस की आठ जीपों को क्षतिग्रस्त करने के साथ ही एक बाइक में आग लगा दी। फिलहाल शांति है और भारी संख्या में फोर्स तैनात है।

राघोपट्टी गांव निवासी धनंजय यादव 2014 में आर्मी में चयनित हुए थे। सिक्किम में उनकी तैनाती थी। 22 मार्च की शाम उनकी मौत हो गई। शुक्रवार को धनंजय का शव घर पहुंचा। प्रशासनिक व पुलिस अधिकारी के मौजूद न होने का आरोप लगाते हुए स्वजन के साथ गांव के लोग शव लेकर चौरीचौरा के भोपा बाजार चौराहे पर प्रदर्शन शुरू कर दिया। धनजंय को बलिदानी का दर्जा देने के लिए आक्रोशित लोगों ने देवरिया हाईवे के साथ ही रेलवे ट्रैक पर आगवामन रोक दिया। बवाल बढ़ने पर रात में डीएम विजय किरन आनन्द, प्रभारी एसएसपी सोनम कुमार मौके पर पहुंच गए। डीएम के समझाने पर स्वजन जवान का दाह संस्कार करने को तैयार हो गए, लेकिन भीड़ में शामिल उपद्रवियों ने अधिकारियों के साथ ही फोर्स पर पथराव करने के साथ ही सड़क पर खड़ी पुलिस की जीप व राहगीरों के वाहनों में तोड़फोड़ शुरू कर दी। उपद्रवियों ने हंगामा किया। स्थिति बिगड़ने पर चौरी चौरा में पूरे जिले की फोर्स बुलानी पड़ी। डीआईजी जे रविन्दर गौड, डीएम के साथ ही पीएसी व क्यूआरटी की टीम मौके पर मुस्तैद रही।

मथुरा हत्याकांड: बंद फ्लैट में सुलगते रहे दंपति के शव

» गुमशुदगी दर्ज होने के बाद भी सक्रिय नहीं हुई पुलिस

» खुलासे के लिए लगायी गयी पांच टीमें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मथुरा। जनपद के थाना हाईवे की कर्मयोगी कॉलोनी में शुक्रवार को बंद फ्लैट में दंपती के जले शव मिलने से सनसनी फैल गयी। फ्लैट में तीन दिन से बदबू आ रही थी लेकिन ताला लगा होने के चलते किसी को शक नहीं हुआ लेकिन जब धुआं उठता देखा तो पड़ोसी दंग रह गए। पड़ोसी ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस जब दरवाजा तोड़कर अंदर घुसी तो दो शव बुरी तरह जले हुए अलग-अलग चारपाई पड़े थे। खुलासे के लिए पांच टीमें लगायी गयी हैं।

मृतकों की शिनाख्त सौंख कस्बा निवासी भीम सिंह और उनकी पत्नी भारती के रूप में हुई है। दंपती को राजस्थान के भरतपुर के युवक पवन एक सप्ताह पूर्व सौंख कस्बे से लेकर आया था। युवक फरार है। मृतकों के परिजनों ने 23 मार्च को उनकी गुमशुदगी दर्ज कराई लेकिन थाना मगोर्रा पुलिस ने गंभीरता नहीं दिखाई अगर पुलिस लापता दंपति की तलाश करती तो शायद जान बच सकती थी। बताया जा रहा है कि फ्रिज मिस्त्री होने के चलते कस्बा सौंख में आते-जाते पवन कुंतल से भीम सिंह की दोस्ती हो गई। पवन ने दिल्ली सचिवालय, रेलवे आदि विभागों में नौकरी दिलाने के एवज में कई बेरोजगारों से करीब 50 लाख ठग लिए। यह धनराशि भीम सिंह के माध्यम से आई। नौकरी नहीं मिली तो वह भीम सिंह से तकादा करने लग गए। इस पर भीम ने पवन से धनराशि लौटाने को कहा। बार-बार भीम तकादा करता रहा, लेकिन धनराशि नहीं लौटाई। माना जा रहा है कि इसी के चलते दंपति की हत्या की गई है।

कांग्रेस से आये जितिन प्रसाद ने खुद को किया साबित, दोबारा बने मंत्री

» कम समय में जीता शीर्ष नेतृत्व का भरोसा

» पिछली बार बनाया गया था प्राविधिक मंत्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। योगी सरकार के पहले कार्यकाल में प्राविधिक शिक्षा मंत्री रहे जितिन प्रसाद दूसरी बार मंत्री बनाए गए हैं। पिछली योगी सरकार में उनका कार्यकाल भले कम रहा हो लेकिन उन्होंने अपनी उपयोगिता साबित की। मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार के दोनों कार्यकाल में केंद्रीय राज्यमंत्री रहे जितिन प्रसाद को विधान सभा चुनाव से पहले 10 जून 2021 में भाजपा केंद्रीय नेतृत्व ने ब्राह्मण चेहरे के रूप में पार्टी में शामिल किया था। जिस समय जितिन भाजपा में शामिल हुए उस समय सरकार पर ब्राह्मण विरोधी होने के आरोप लग रहे थे।

कांग्रेस से आए जितिन प्रसाद को सितंबर 2021 में प्रदेश सरकार ने एमएलसी बनाते हुए कैबिनेट मंत्री का पद देकर उनकी जिम्मेदारी बढ़ा दी थी। पहली बार प्रदेश के मंत्रिमंडल में शामिल हुए जितिन ने इसे बखूबी निभाया। उन्होंने प्रबुद्ध सम्मेलनों के जरिए पार्टी के पक्ष में माहौल बनाना शुरू किया। सबसे ज्यादा जोर ब्राह्मणों की नाराजगी दूर करने और उन्हें भाजपा के नजदीक लाने पर रहा। जितिन ने लखीमपुर खीरी, सीतापुर , पीलीभीत, हरदोई, बलिया, बाराबंकी, सोनभद्र आदि जिलों में सभाएं व सम्मेलन किए। जिन जिलों में जितिन ने सभाएं कीं वहां परिणाम अच्छे आए। पार्टी नेतृत्व अच्छी तरह जानता है कि रूहेलखंड में युवा ब्राह्मण चेहरे के रूप में उन्हें आगे बढ़ाने का लाभ मिलेगा इसलिए तमाम अटकलों के बीच उनकी उपयोगिता व कार्यक्षमता को देखते हुए उन्हें दोबारा सरकार बनने पर कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। हालांकि कहा जा रहा था कि वे भाजपा कल्चर में शायद ही फिट हो सके।

अपनी कड़ी मेहनत और मधुर व्यवहार के कारण उप मुख्यमंत्री बने बृजेश पाठक

भाजपा का सबसे बड़ा ब्राह्मण चेहरा बन गए हैं बृजेश पाठक, मोदी और अमित शाह के भी हैं चहेते

» कोरोना काल में लोगों की सबसे ज्यादा मदद करने वाले मंत्री थे बृजेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मंत्रिमंडल में पीएम मोदी और अमित शाह के चहेते ब्रजेश पाठक को उप मुख्यमंत्री जैसे अहम पद की जिम्मेदारी मिली है। अपनी कड़ी मेहनत और मधुर व्यवहार के कारण बृजेश पाठक उप मुख्यमंत्री बने है। शपथ लेते ही अब वे भाजपा का सबसे बड़ा ब्राह्मण चेहरा भी बन गए हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्र संघ अध्यक्ष रहे बृजेश को उनके सरल व्यक्तित्व, सहजता और सियासी स्वीकार्यता ने 32 साल में डिप्टी सीएम के पद तक पहुंचा दिया।

यही नहीं, जब भाजपा सरकार के सत्तारूढ़ होने के बाद कानपुर में विकास दुबे कांड हुआ तो सरकार को लेकर ब्राह्मणों के एक वर्ग में नाराजगी पनपने लगी। वह इस दौरान लगातार बयान देते रहे कि ब्राह्मण भाजपा से नाराज नहीं हो ही सकता। साथ ही चाहे प्रदेश के निष्क्रिय अधिकारियों पर हमला रहा हो या फिर ब्राह्मणों की नाराजगी का मुद्दा पाठक हमेशा सरकार के साथ खड़े रहे। शायद यही वजह रही कि उन्हें पार्टी नेतृत्व व संगठन ने कद बढ़ाकर पुरस्कृत किया है। योगी की पिछली सरकार में पाठक कानून मंत्री थे। लखनऊ कैंट विधानसभा क्षेत्र के विधायक ब्रजेश पाठक हरदोई जिले के मल्लावां क्षेत्र के निवासी हैं। 25 जून 1964 को सुरेश पाठक के घर जन्मे बृजेश ने छात्रनेता के रूप में राजनीति की शुरुआत की। वह 1989 में लखनऊ विश्वविद्यालय छात्र संघ के उपाध्यक्ष और 1990 में अध्यक्ष बने। बृजेश पाठक 22 अगस्त 2016 को भाजपा में शामिल हो गए, इससे पहले वे बसपा में थे। भाजपा ने 2017 के चुनाव में लखनऊ मध्य सीट से चुनाव मैदान में उतारा। पार्टी की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हुए ब्रजेश पाठक ने सपा सरकार के मंत्री रविदास मेहरोत्रा को पांच हजार से अधिक वोटों से मात दी। 2022 के विधानसभा चुनाव में भी उन्होंने लखनऊ कैंट सीट से चुनाव लड़ा और उन्होंने सपा प्रत्याशी सुरेंद्र सिंह राजू को 39512 वोटों से हरा दिया और जीत दर्ज की। बृजेश पाठक के परिवार में पत्नी नम्रता, दो बेटियां दीपिका, सांभवी और एक बेटा कार्तिक है।

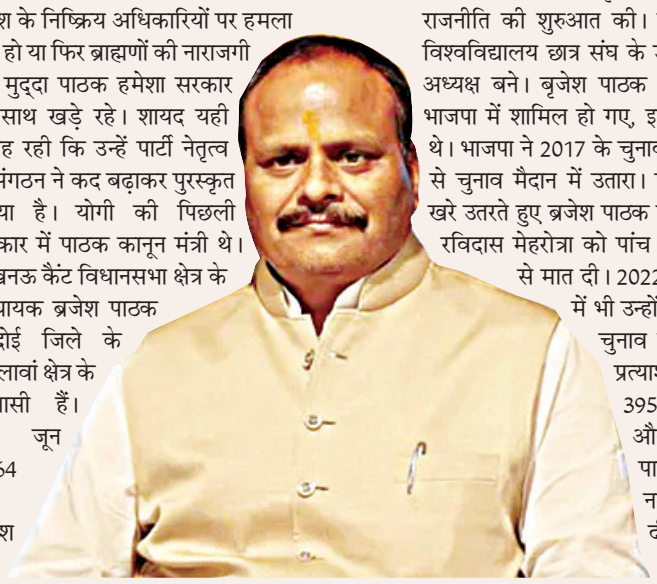

गरीबों की करते रहे हैं मदद, नहीं दिखाई हिचक

कोरोना काल में बृजेश पाठक ने अधिकारियों द्वारा गरीबों की सुनवाई न करने को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखा। भाजपा नेतृत्व ने चुनाव से पहले ब्राह्मण नेताओं की एक कमेटी बनाई, उसमें बृजेश पाठक भी शामिल थे। अपनी इस कार्यशैली से जहां बृजेश एक ब्राह्मण नेता के रूप में स्थापित हुए। वहीं संगठन की नजरों में उनका कद बढ़ता चला गया। प्रदेश में जहां कहीं भी ब्राह्मणों के खिलाफ कोई बड़ी घटना होती तो वह वहां जरूर जाते। उनकी इसी क्षमता के चलते ब्राह्मण चेहरे के स्थान पर बृजेश जैसे सक्रिय नेता को उप मुख्यमंत्री बनाया गया।

डिप्टी सीएम बनते ही पाठक के आवास पर आतिशबाजी

इकाना स्टेडियम में शपथ ग्रहण समारोह चल ही रहा था कि बड़ी संख्या में समर्थक राजभवन स्थित ब्रजेश पाठक के सरकारी आवास पहुंच गए। यहां पहले से ही सैकड़ों की संख्या में समर्थक जश्न मना रहे थे। देर रात तक डिप्टी सीएम के आवास के बाहर समर्थकों की भारी भीड़ रही। समर्थकों ने आवास के बाहर जोरदार आतिशबाजी की। यही नहीं सुबह भी उनसे मिलने वालों का तांता लगा रहा। डिप्टी सीएम के आवास के आसपास ऐसा माहौल था कि मानो होली और दीवाली एक ही दिन है।

केंद्र सरकार ने संसद को बताया

किसी भी राज्य ने ऑक्सीजन की कमी से मौत की सूचना नहीं दी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने संसद को बताया कि सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों से कोरोना महामारी के दौरान ऑक्सीजन की कमी की वजह से हुई मौतों का ब्यौरा देने का आग्रह किया गया था। इस पर कुछ राज्यों ने ही जानकारी दी है, लेकिन किसी भी ने ऑक्सीजन की कमी के चलते मौतों की सूचना नहीं दी है।

संसद के निचले सदन लोकसभा में केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री भारती प्रवीण पवार ने कहा कि केंद्र सरकार के पास कोरोना संक्रमण के मामलों और इसकी वजह से होने वाली मौतों के वही आंकड़े होते हैं जो उसे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की ओर से उपलब्ध कराए जाते हैं। उन्होंने बताया कि कोरोना संक्रमण से होने वाली मौतों को उचित तरीके से दर्ज करने के लिए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने 10 मई, 2020 को ही दिशानिर्देश जारी किए थे। इसके अलावा स्वास्थ्य मंत्रालय ने नौ अक्टूबर, 2020 को राज्यों को पत्र लिखकर आईसीएमआर, डब्ल्यूएचओ की ओर से जारी संबंधित दिशानिर्देशों के बारे में जानकारी दी थी। उन्होंने बताया कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के लिए कोरोना महामारी को लेकर 180 से ज्यादा दिशानिर्देश, परामर्श, मानक और योजनाएं जारी की गई है।

उत्तराखंड में पांचवीं विधान सभा की अध्यक्ष चुनी गईं पहली महिला विधायक ऋतु खंडूरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। उत्तराखंड की पांचवीं विधानसभा के अध्यक्ष पद पर कोटद्वार से भाजपा विधायक ऋ तु खंडूरी भूषण को निर्विरोध चुन लिया गया है। वह राज्य की पहली महिला विधानसभा अध्यक्ष हैं। प्रोटेम स्पीकर बंशीधर भगत की अध्यक्षता में ऋतु खंडूरी भूषण सर्वसम्मति से विधानसभा की अध्यक्ष चुनी गईं।

सदन के वरिष्ठ विधायकों ने ऋतु खंडूरी भूषण को पदभार कराया ग्रहण। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी भी सदन में मौजूद रहे। नव निर्वाचित विधानसभा अध्यक्ष ऋ तु खंडूरी भूषण ने सदन को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने निर्विरोध चुने जाने पर सदन के सभी सदस्यों का धन्यवाद किया।

विधानसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की प्रक्रिया गुरुवार को प्रारंभ हुई। पहले दिन भाजपा विधायक ऋ तु खंडूरी ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और उनकी कैबिनेट के सदस्यों की उपस्थिति में नामांकन दाखिल किया। नामांकन के अंतिम दिन निर्धारित समयावधि तक अन्य किसी उम्मीदवार ने पर्चा नहीं भरा। यद्यपि कांग्रेस ने गुरुवार देर शाम ही विधानसभा अध्यक्ष पद के लिए अपना प्रत्याशी न उतारने की घोषणा कर दी थी। यह बात अलग है कि निर्वाचन की स्थिति आने पर भी खंडूड़ी की जीत तय थी, क्योंकि 70 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा के विधायकों की संख्या 47 है। शनिवार सुबह 11 बजे विधानसभा के सभामंडप में खंडूड़ी के निर्वाचन की घोषणा प्रोटेम स्पीकर भगत ने की। इसके बाद खंडूड़ी अध्यक्षीय पीठ पर आसीन हुईं। राज्य गठन के बाद यह पहला अवसर है, जब कोई महिला विधायक विधानसभा अध्यक्ष बनी हैं।

सतीश महाना बन सकते हैं विधान सभा अध्यक्ष!

» योगी सरकार में नहीं मिली है जगह
» पार्टी दूसरे तरीके से करेगी उपयोग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंत्रिपरिषद में पिछली सरकार के कई बड़े चेहरों की नामौजूदगी को लेकर भले ही सवाल उठ रहे हों लेकिन इनमें से कुछ का पार्टी दूसरे तरीके से उपयोग करेगी। योगी पार्ट टू में जगह न पाने वालों में शामिल डॉ. दिनेश शर्मा और सतीश महाना को जल्द ही दूसरी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी जा सकती है। वहीं यह भी तय है कि मंत्रिपरिषद से कुछ चेहरों का पत्ता उनकी छवि और प्रदर्शन को देखते हुए कटा गया है।

नई सरकार में जगह न पाने वालों में सबसे प्रमुख नाम आठवीं बार विधान सभा पहुंचने वाले सतीश महाना का है। महाना पिछली सरकार में औद्योगिक विकास मंत्री थे। सूत्रों की मानें तो महाना की वरिष्ठता और उनके लंबे राजनीतिक अनुभव को देखते हुए उन्हें विधान सभा अध्यक्ष का ओहदा सौंपा जा सकता है। विधान सभा में इस बार मुख्य विपक्षी दल समाजवादी पार्टी का न सिर्फ संख्या बल बढ़ा है बल्कि नेता प्रतिपक्ष की भूमिका खुद सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव निभाएंगे। ऐसे में विधान सभा अध्यक्ष की कुर्सी पर भाजपा महाना जैसे राजनीतिक रूप से परिपक्व व्यक्ति को बैठा सकती है। योगी की पिछली सरकार में उप मुख्यमंत्री रहे डा.दिनेश शर्मा को नई सरकार में जगह नहीं मिली है लेकिन प्रबल संभावना है कि उन्हें विधान परिषद के सभापति का दायित्व सौंपा जा सकता है। दिनेश शर्मा वर्तमान में विधान परिषद सदस्य हैं। यह भी माना जा रहा है कि स्वतंत्र देव सिंह को मंत्री बनाये जाने के बाद रिक्त हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी पार्टी किसी ब्राह्मण को सौंपना चाहेगी। भाजपा डॉ. दिनेश शर्मा का उपयोग इस लिहाज से भी कर सकती है। पिछली सरकार में ऊर्जा मंत्री रहे श्रीकांत शर्मा और मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह भी नई सरकार में शामिल नहीं हो पाए हैं। भाजपा इनका उपयोग संगठन में कर सकती है। आशुतोष टंडन गोपाल को भी संगठन में जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।